₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

समाजवादी पार्टी संघर्षों की पार्टी है। देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। देश को बांटने वाली ताकतों से सावधान रहने की जरूरत है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

अगस्त 2022

वर्ष 23 | संख्या 10

प्रिय पाठकों,

आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन बदले हुए कलेवर में अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आपके उत्साहवर्धन और प्रेम के कारण ही हमारा यह सफर यहां तक पहुंचा है। हम भरोसा दिलाते हैं कि हम आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं आने देंगे। कृपया हमेशा की तरह आगे भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

धन्यवाद!

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

भाजपा के खिलाफ बनेगा मजबूत विकल्प 50

06 कवर स्टोरी

आजादी जिंदाबाद

अन्याय का प्रतिरोध 46

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का सरकारी तंत्र द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के खिलाफ पार्टी मजबूती से अपने नेताओं के साथ खड़ी है। अन्याय का प्रतिरोध करने की समाजवादी परंपरा का निर्वहन करते हुए पार्टी ने स्पष्ट कर दिया है कि वह इस सरकारी उत्पीड़न के खिलाफ मुखर होकर अपना विरोध दर्ज करेगी।

बिहार से चली बदलाव की बयार 48

अगस्त क्रांति और समाजवादी आंदोलन 28

भिन्नता में एकता का अमृत महोत्सव

उदय प्रताप सिंह

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखा है कि भारत की सबसे बड़ी विशेषता भिन्नता में एकता है।

सचमुच दुनिया में भिन्नता में एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भारतीय समाज है। भारत में विभिन्न संस्कृतियों, जातियों, धर्म, रीति रिवाज, भाषाओं की बहुलता का भंडार भले है,और बिल्कुल है, फिर भी हम सब भारतीय हैं यह हम सब मानते हैं,जानते हैं।

अनंत काल से भारत इस मिली-जुली संस्कृति का एक सुंदर उदाहरण रहा है हमारे समाज में इसी व्यवस्था के अंतर्गत हिंदू , मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी समेत विभिन्न धर्मों के लोग हैं जो

विविध परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। उनके त्योहार अलग हैं, उनका खान-पान अलग है, वेशभूषा अलग है, बोलियां अलग हैं, किताबें, इष्ट अलग लेकिन उसके बावजूद वे सब भारतीय हैं। सगर्व भारतीय हैं।

अगर हम प्रकृति की बात करें तो यहां कुदरत भिन्नता में एकता का सबसे बढ़िया उदाहरण है। मानव का शरीर ले लीजिए, हमारे अकेले भारत में ही 140 करोड़ लोगों की आबादी है, लेकिन किसी की किसी से शक्ल नहीं मिलती, रंग नहीं मिलता, क़द नहीं मिलता ,काठी नहीं मिलती, लेकिन फिर भी वह सब इंसान हैं, मनुष्य हैं।

इसी प्रकार हमारे शरीर के विभिन्न अंग आपस में नहीं मिलते, हमारे नाखून नहीं मिलते, हमारी आंखों के रंग नहीं मिलते ,हमारी हाथ की रेखाएं तक भिन्न हैं लेकिन इसके बावजूद भी हम सब मानव के शरीर की इकाई होते हैं। अगर हम भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो कश्मीर से कन्याकुमारी तक कितनी तरह की जलवायु है? कितने तरह की वेशभूषा है? कितनी तरह की संस्कृतियों हैं? रहन-सहन हैं, बोलचाल है।

सब में भिन्नता है फिर भी हम एक हैं तो यह भिन्नता में एकता इस जीवन को सुखमय बनाने के लिए बहुत आवश्यक है।अगर बगीचे में एक प्रकार के ही फूल हों,वृक्ष,पक्षी हों तो वह क्या सुन्दर होगा?उसकी सुन्दरता पुष्प,वृक्ष,पक्षियों की विविधताओं से बढ़ जाती है। यह बात जितनी शीघ्र हम समझ लेते हैं उतनी ही जीवन में प्रसन्नता मिलती है।

जिस तरह किसी की किसी से शक्ल नहीं मिलती, उसी तरह किसी से किसी की अक्ल भी नहीं मिलती। उसी तरह , किसी की किसी से जीवन शैली भी नहीं मिलती है, सबके सोचने का ढंग अलग अलग है। अपने ही पौराणिक इतिहास से अगर उदाहरण लें तो भगवान राम के तीन भाई और थे और चारों भाइयों के स्वभाव अलग-अलग थे। लक्ष्मण उग्र थे, राम शांति थे, भरत संत थे और शत्रुघ्न निस्पृह थे, तो जब चार सगे भाइयों के स्वभाव नहीं मिलते, सोचने का ढंग नहीं मिलता फिर भी पारिवारिक एकता उनको एक सूत्र में बांधे रहती है या कहें कि पारिवारिक एकता के सूत्र में वे भाई-भाई बने रहते हैं। इससे बढ़िया भिन्नता में अभिन्नता का क्या उदाहरण हो सकता है? सुखी जीवन का अचूक मंत्र यही अनेकता में एकता है।

हमारे देश में मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तमाम तरह की विचारधाराएं हैं। हिंदू धर्म में कोई शिव को मानता है कोई विष्णु को मानता है कोई शक्ति की पूजा करता है लेकिन सब हिंदू हैं। उसी तरह से विभिन्न धर्मों के मानने वाले भी जो इस देश में रहते हैं सब भारतीय हैं

हमारे देश में मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तमाम तरह की विचारधाराएं हैं। हिंदू धर्म में कोई शिव को मानता है कोई विष्णु को मानता है कोई शक्ति की पूजा करता है लेकिन सब हिंदू हैं। उसी तरह से विभिन्न धर्मों के मानने वाले भी जो इस देश में रहते हैं सब भारतीय हैं ,चाहे वे साकार के उपासक हों या निराकार के। इसलिए जिस प्रकार वह मनुष्य सुखी रहता है जो इस भिन्नता में अभिन्नता को स्वीकार कर लेता है वही असली देश भक्तों में है।

राम जानते हैं कि लक्ष्मण का स्वभाव दूसरी तरह का है पर लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम में कभी कमी नहीं आई। क्योंकि इस स्वभाव की भिन्नता भी शुभ है। इसमें वही शक्ति है जिससे रावण पराजित हो सकता है। इसी प्रकार हमको भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इस देश में भी जो भिन्न-भिन्न धर्म के लोग रहते हैं, भिन्न भाषाएं बोलते हैं वह भी हमारे हैं।देश की एकता, अखंडता और समृद्धि और सुखी जीवन इसी भिन्नता में अभिन्नता के सिद्धांत में निहित है। इसी में हमारी शक्ति निहित है और देश का उज्जवल भविष्य भी इसी सकारात्मकता में निहित है।

जय हिंद!

आजादी जिंदाबाद

भारत के स्वतंत्रता संग्राम इतिहास में समाजवादियों और समाजवादी विचारधारा से प्रभावित स्वाधीनता सेनानियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। समाज के आखिरी व्यक्ति के जीवन में सुधार लाने की समाजवादी विचारधारा वास्तविक अर्थों में आजादी हासिल करने की कसौटी है। देश को आजाद कराने में समाजवादियों की भूमिका भुलाई नहीं जा सकती। आजादी के 75 वर्ष होने के अवसर पर समाजवादी पार्टी ने इसे बड़े आयोजन के रूप में मनाया और आजादी जिंदाबाद के नारे लगाते हुए इस शपथ को दोहराया कि समाज में गैर बराबरी खत्म करते हुए समतामूलक समाज बनाने के पथ पर पार्टी हमेशा चलती रहेगी। 9 से 15 अगस्त तक घर-घर तिरंगा फहराने के समाजवादी पार्टी के अभियान के प्रति आम लोगों का जबरदस्त उत्साह इसका संकेत है कि समाजवादी विचारधारा के प्रति लोगों की गहरी आस्था है। पेश है विस्तृत रिपोर्ट:

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 9 अगस्त से 15 अगस्त 2022 तक घर-घर तिरंगा अभियान के अन्तर्गत राजधानी लखनऊ सहित पूरे प्रदेश के विभिन्न जनपदों में समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने पार्टी कार्यालयों और अपने आवास पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

एक सप्ताह का यह अभियान स्वतंत्रता आंदोलन की स्मृति, शहीदों को नमन तथा भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए समर्पित रहा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर हुए इस अभियान का उद्देश्य यह था कि आजादी की सार्थकता के लिए प्रत्येक नागरिक को गौरवान्वित होना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि 9 अगस्त वह स्मरणीय ऐतिहासिक तिथि है जब 1942 में गांधी जी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो का आव्हान किया था। इस मौके पर उन्होंने देशवासियों को 'करो या मरो' का मंत्र दिया था। कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद समाजवादियों ने ही भारत छोड़ो आंदोलन की बागडोर संभाली थी।

समाजवादी नेताओं सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, डॉ राम मनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली, ऊषा मेहता आदि ने तब

स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी थी। अगस्त क्रांति का सपना देश में किसान, मजदूर और युवाओं का राज स्थापित करना था ताकि सभी को हक और सम्मान का जीवन हासिल हो सके। इस सपने को साकार करने तथा संवैधानिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्शों को बचाने तथा उन्हें पुनः स्थापित करने की जिम्मेदारी आज फिर आम नागरिकों एवं समाजवादियों पर आ गई है।

9 से 15 अगस्त तक चले समाजवादी पार्टी के इस अभियान के प्रति प्रदेश के हर जनपद में जबरदस्त उत्साह देखा गया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं, नेताओं, और पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में तिरंगा यात्रा निकाली जिसमें बड़ी संख्या में आम लोगों ने भी हिस्सेदारी की। तिरंगा लहराते हुए समाजवादियों का जत्था जिस गली, जिस शहर और जिस गांव से निकला वहां लोगों ने उसका जोरदार स्वागत किया। समाजवादी पार्टी के इस अभियान के प्रति पूर्ण समर्थन और सहयोग जताते हुए इलाकाई लोगों ने भी अपने घरों में तिरंगा फहराया और समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान देने का शपथ लिया।

राजधानी लखनऊ में समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय 19 विक्रमादित्य मार्ग लखनऊ पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री किरनमय नंदा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने वाले वीर सेनानियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि अगस्त क्रांति को समाजवादी नेताओं जयप्रकाश नारायण जी, डॉ राममनोहर लोहिया के नेतृत्व से गति मिली थी।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने कानपुर ग्रामीण की विधानसभा क्षेत्र बिठूर के कस्बा बिठूर में शहीदों को नमन करते हुए घर-घर राष्ट्रीय ध्वज कार्यक्रम में शामिल हुए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी ने गुलिस्तां कालोनी स्थित अपने आवास पर तिरंगा फहराया।

मोहनलालगंज में श्री आर.के. चौधरी पूर्व मंत्री ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

आजमगढ़ में पूर्व मंत्री श्री बलराम यादव विधायक श्री आलम बदी, दुर्गा प्रसाद यादव चंद्रदेव राम, नफीस अहमद विधायक, राकेश यादव संग्राम सिंह विधायक, कुशीनगर में श्री स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री राधेश्याम सिंह, बलिया में श्री नारद राय पूर्व मंत्री, श्री जय प्रकाश अंचल विधायक, मऊ में श्री राजीव राय, फैजाबाद में लीलावती कुशवाहा, बिंदकी में डॉ राजपाल कश्यप, गोरखपुर में संतोष यादव सनी, सुनील सिंह, गाजीपुर में श्री जयकिशन साहू, शाहजहांपुर में श्री तनवीर, मेरठ में श्री राजपाल सिंह, मुरादाबाद में मोहम्मद फहीम, मैनपुरी में श्री तोताराम यादव, अम्बेडकरनगर में श्री विशाल वर्मा, कानपुर में श्री इमरान मसूद, इलाहाबाद में पूर्व एमएलसी श्री वासुदेव यादव, कानपुर में श्री अभिमन्यू गुप्ता, बस्ती में श्री महेन्द्र सिंह यादव विधायक, आगरा में श्री गौरव यादव, इलाहाबाद में श्री आशुतोष सिन्हा एमएलसी ने अगस्त क्रांति दिवस पर तिरंगा अभियान को गति दी।

समाजवादियों के गांव में
लहराया तिरंगा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने अगस्त क्रांति के दिन 9 अगस्त को कन्नौज जिले की तिर्वा तहसील के झौआ गांव में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों को सम्मानित किया। श्री अखिलेश यादव ने गांव के लोगों को राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा देकर 9 अगस्त से समाजवादी पार्टी के घर-घर तिरंगा फहराने के अभियान की शुरुआत भी की।

इस अवसर पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज ही के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन का नारा दिया था। आजादी की लड़ाई में अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने कुर्बानी दी। तब देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। 9 अगस्त का दिन काकोरी के क्रांतिकारियों को याद करने का दिन भी है। आजादी की लड़ाई में जो महत्व 15 अगस्त का है, वैसा ही महत्व 9 अगस्त का भी है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कन्नौज के झौआ गांव के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का भारत छोड़ो आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान है। यह समाजवादियों का गांव है। आज से समाजवादी पार्टी घर-घर झंडा लगाने के

अभियान की शुरुआत कर रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की मूल पार्टी आरएसएस है। भाजपा आरएसएस का राजनीतिक दल है। आरएसएस ने भारत का तिरंगा झंडा नहीं लगाया। आरएसएस वही है, जिसने तिरंगा का विरोध किया था। आजादी की लड़ाई में हिन्दू और मुसलमान भाइयों सभी का बराबर का योगदान रहा है।

श्री यादव ने कहा कि आजादी की लड़ाई में जिन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया था, वे आज अंग्रेजों की तरह ही समाज को जाति-धर्म में बांटकर नफरत फैलाकर राज करना चाहते हैं। उन्होंने कहा भाजपा सरकार में संविधान पर हमला हो रहा है। गरीबों, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों को न्याय नहीं मिल रहा है। भाजपा के लोगों द्वारा सभी संस्थाओं और संस्थानों पर कब्जा कर लिया गया है। पड़ोसी मुल्कों की तरह यहां भी लोकतंत्र खत्म करने की साजिशें चल रही है। लोकतंत्र को बचाने की जिम्मेदारी हम सब की है।

आजादी की लड़ाई में जिन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया था, वे आज अंग्रेजों की तरह ही समाज को जाति-धर्म में बांटकर नफरत फैलाकर राज करना चाहते हैं। लोकतंत्र को बचाने की जिम्मेदारी हम सबकी है

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा की सरकार गरीबों, किसानों की सरकार नहीं है। यह उद्योगपतियों की सरकार है। जबसे भाजपा सत्ता में आयी है, महंगाई बढ़ी है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने सेना में अग्निवीर योजना लाकर नौजवानों को धोखा

दिया। आने वाले समय में यह सरकार इसी तरह की योजना पुलिस और पीएसी की भर्ती में भी लाएगी। इस सरकार ने सरकारी नौकरियां भी संविदा पर कर दी है। नौजवानों को नौकरियां नहीं मिल रही है। बहुत बड़ी संख्या में नौजवान बेरोजगार है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार उद्योगपतियों के लिए काम कर रही है। उद्योगपतियों को बैंकों से कर्ज दिलाया। बड़ी संख्या में उद्योगपति देश छोड़ गए। इनमें भारत छोड़ने की होड़ लगी है।

श्री अखिलेश यादव ने ग्राम जवाहरपुरवा सत्तार में स्वर्गीय कुंदन सिंह नायक मंदिर परिसर में बंजारा (नायक) समाज के बीच झंडा वितरण के साथ सदस्यता अभियान का भी शुभारम्भ किया। उन्होंने तिर्वा में आयुष सैनी के निधन पर शोक संतप्त परिवार से मिलकर सांत्वना भी दी।

जय हिन्द के नारों संग

राष्ट्रीय ध्वज का अभिवादन

बुलेटिन ब्यूरो

भारत की स्वतंत्रता के 75 साल होने के अवसर पर समाजवादी पार्टी ने 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वक मनाया। राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के सभी जनपद कार्यालयों में राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई और इस मुबारक मौके पर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों के सपनों को पूरा करने का भी संकल्प लिया गया। राजधानी लखनऊ में पार्टी मुख्यालय, जनेश्वर मिश्र ट्रस्ट में झंडा फहराया गया। मुख्य समारोह जनेश्वर मिश्र पार्क, लखनऊ में हुआ जहां समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने राष्ट्रीय ध्वज का अभिवादन किया।

सुबह से ही जनेश्वर मिश्र पार्क में तिरंगा लिए और लाल टोपी पहने नौजवानों की टोलियां आने लगी थीं। महिलाएं भी समूह में तिरंगा लिए आई थीं। चारों तरफ उत्साह और उमंग से भरे लोगों का रेला था। श्री अखिलेश यादव ने जनेश्वर मिश्र पार्क में जयहिन्द और भारत माता के जय के नारों से आकाश को गुंजाते लाल टोपी पहने तिरंगा झंडा लिए हजारों समाजवादी कार्यकर्ताओं के बीच सभी का अभिवादन किया और 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस की मुबारकबाद दी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भारत को आजादी तमाम शहादतों के बाद मिली है। उनकी कुर्बानी भुलाई नहीं जा सकती है। आज जब हम आजादी की खुशियां मना रहे हैं हमें आजादी की लड़ाई में लिए गए संकल्पों और स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करने का व्रत लेना होगा। हमें आजादी के साथ चुनौतियां भी मिली हैं। आज महंगाई चरम पर है। बेरोजगारी बढ़ती

जा रही है। अगर दुनिया के आंकड़ों को देखें तो स्वास्थ्य के क्षेत्र में बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर हमारा देश बहुत पीछे दिखाई दिया है। किसानों की आर्थिक दिक्कत बढ़ी है।

श्री यादव ने कहा कि आज हमारे देशवासियों को इस बात की चिंता है कि कुछ लोग जाति के भेदभाव को आगे रखकर झगड़ा करा कर वोटों को साधने का काम कर रहे हैं। लोकतंत्र की मजबूती, भाईचारा और सद्भावना के साथ संविधान के रास्ते पर चलकर ही हमारा देश दुनिया में आगे बढ़ता नज़र आएगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर और डॉ लोहिया ने समय-समय पर कोशिश की थी कि देश से छुआछूत, जातिवाद दूर हो। समाजवादी इसी रास्ते पर चलते रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आजादी का सबसे बड़ा सपना यही है कि आखिरी आदमी तक व्यवस्थाएं अच्छी हों और जीवन अच्छा हो। समाजवादी एक परिवार है, जो सामाजिक न्याय के लिए संघर्षरत रहा है।

जनेश्वर मिश्र पार्क के बाद श्री अखिलेश यादव डॉ लोहिया पार्क, गोमतीनगर, लखनऊ भी पहुंचे जो रखरखाव के अभाव में वीरान सा होता जा रहा है। जगह-जगह पत्थर टूटे हुए हैं। यहां साल 2005 में डॉ लोहिया की प्रतिमा स्थापित की गई थी जिसकी उपेक्षा हो रही है। स्वतंत्रता दिवस पर पश्चिम बंगाल (कोलकाता) में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री किरनमय नंदा ने झंडारोहण किया। हरिद्वार में डॉ सत्यनारायण सचान, चन्द्रशेखर, डॉ राजेन्द्र पाराशर, कर्नल जानसारी, सुमित तिवारी, लव दत्ता, आशीष यादव, देहरादून में अनिल कुमार, अतुल शर्मा, संजय मल्ल, अजय गुरंग, डॉ एच.पी. यादव, अखिलेश सिंह ने झंडारोहण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

लखनऊ महानगर के पूर्व अध्यक्ष श्री सुशील दीक्षित के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी मुख्यालय से प्रारम्भ साइकिल यात्रा को पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से समाजवादी सैनिक प्रकोष्ठ के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष कर्नल शरद सरन व अन्य पूर्व पदाधिकारियों सर्वश्री इन्द्रेश सिंह, छोटे लाल, विजय कुमार तथा अन्य 40 सैनिकों ने भेंट के दौरान राष्ट्रीय ध्वज प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

देश का सिपाही हूं...

समाजवादी पार्टी नेतृत्व का भारतीय सेना के प्रति गहरा सम्मान रहा है और साथ ही सैन्य परिवेश से गहरा लगाव भी। पार्टी के संस्थापक- संरक्षक श्री मुलायम सिंह यादव देश के रक्षा मंत्री की जिम्मेदारी निभा चुके हैं और सेना के हित में लिए गए उनके निर्णयों की आज भी चर्चा होती है। भारतीय सेना के आधुनिकीकरण की दिशा में उनका बड़ा योगदान रहा। वहीं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की स्कूली शिक्षा ही मिलिट्री स्कूल में हुई। लिहाजा स्वाभाविक रूप से सैन्य अनुशासन और मातृभूमि के प्रति प्रेम उनमें कूट-कूट कर भरा है। इन तस्वीरों में सपा नेतृत्व के इसी पहलू की बानगी देखिए:

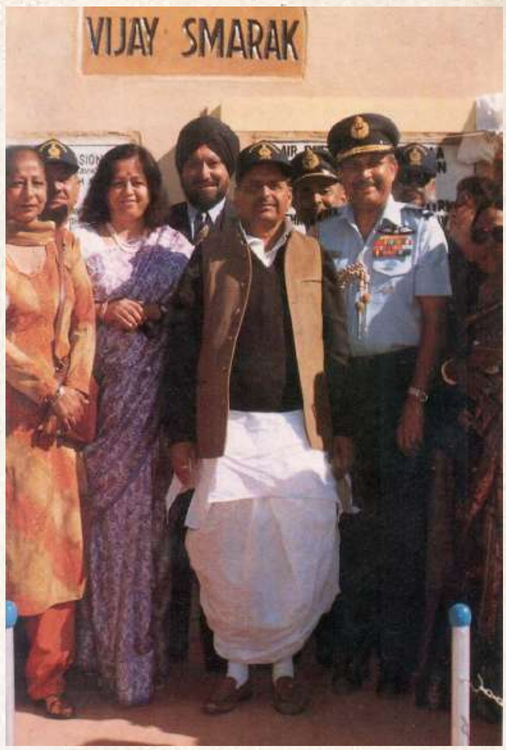
VIJAY SMARAK

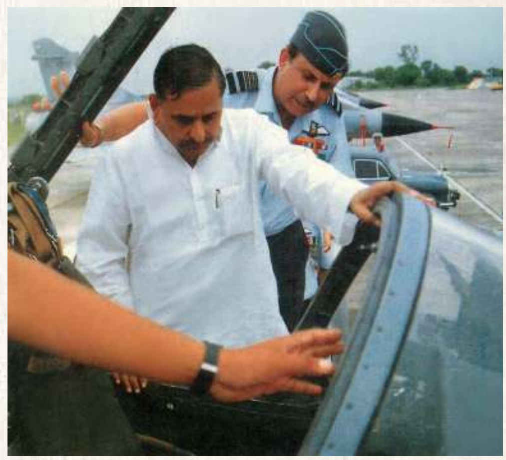

समाजवादी पदयात्रा
उत्साह और उमंग का संगम

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की प्रेरणा से 9 अगस्त क्रांति दिवस के अवसर पर 'देश बचाओ-देश बनाओ' समाजवादी पदयात्रा छात्र नेता श्री अभिषेक यादव व उनके साथियों के नेतृत्व में जनपद गाजीपुर में जिला समाजवादी पार्टी कार्यालय से प्रारम्भ हुई।

पद यात्रा को पूर्व नेता विरोधी दल विधानसभा श्री रामगोविन्द चौधरी और पूर्व मंत्री श्री दारा सिंह चौहान ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर श्रीमती जूही सिंह, श्रीमती कनकलता सिंह पूर्व सांसद भी मौजूद रहीं और राष्ट्रीय ध्वज भी फहराया।

पदयात्रा के मार्ग पर इलाकाई समाजवादी युवाओं ने इसका जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ नेता और स्थानीय पदाधिकारी भी मौजूद थे। आम जनता के बीच में पदयात्रा को लेकर खासा उत्साह देखा गया।

पदयात्रा के कार्यक्रम के मुताबिक अगस्त क्रांति के अवसर पर 9 अगस्त से 27 अक्टूबर तक देश बचाओ-देश बनाओ समाजवादी पदयात्रा का पहला चरण निकाला गया है। इस यात्रा के तहत समाजवादी चिंतक एवं विचारक डॉ. राम मनोहर लोहिया, समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव और पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव की नीतियों, कार्यक्रमों, विचारों व उनके संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है।

पदयात्रा जिन जिलों से होकर गुजर रही है वहां के समाजवादी पार्टी कार्यालय, सभी विधानसभाओं, तहसीलों और इलाकों में पहुंच रही है। इस यात्रा के दौरान समाजवादी पार्टी सदस्यता अभियान एवं तिरंगा झंडा अभियान के साथ ही नुक्कड़ सभा, जुलूस, संगोष्ठी, वृक्षारोपण एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता के बारे में भी लोगों को बताया जा रहा है। इसके लिए सभी जनपदों के विधायक, पूर्व विधायक तथा संगठन के सभी पदाधिकारी इस पदयात्रा में सहयोग कर रहे हैं।

कार्यक्रम के मुताबिक पदयात्रा बलिया के बाद 15 सितंबर को आजमगढ़ होते हुए 3 अक्टूबर को जौनपुर पहुंच जाएगी। इसी तरह 14 अक्टूबर को भदोही होते हुए 19 अक्टूबर को वाराणसी पहुंच जाएगी। 27 अक्टूबर को देश बचाओ-देश बनाओ समाजवादी पदयात्रा के पहले चरण का समापन हो जाएगा।

जौनपुरः अमर सेनानियों को याद किया

बुलेटिन ब्यूरो

अगस्त क्रांति दिवस के अवसर पर दिनांक 9 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सम्मान में ग्राम अगरौरा, जिला जौनपुर में अमर शहीद स्वर्गीय रामानंद पुत्र स्वर्गीय अमीर चौहान एवं अमर शहीद स्वर्गीय रघुराई पुत्र स्वर्गीय मथुरा चौहान के शहीद स्थल पर शहीदों के सम्मान में पुष्पांजलि अर्पित की गई एवं राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

इस मौके पर शहीदों के परिवार वालों का अभिनंदन किया गया। इस कार्यक्रम में

मुख्य रूप से श्री लल्लन प्रसाद यादव पूर्व एमएलसी एवं श्री श्रीराम यादव पूर्व कैबिनेट मंत्री की गरिमामई उपस्थिति रही। इनके अलावा हिमांचल चौहान , लालता प्रसाद चौहान, लालबहादुर चौहान, रामकुमार चौहान, दीवास चौहान,रमाशंकर यादव पूर्व प्रधान एवं रामजीत यादव प्रधान दक्षिण पट्टी एवं गांव के अन्य लोग मौजूद रहे।

इसके पश्चात एक अन्य कार्यक्रम में ग्राम सुल्तानपुर, जिला जौनपुर में स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय भगेलू राम यादव पुत्र स्वर्गीय दशरथ यादव एवं स्वर्गीय भगेलू राम के चचेरे भाई स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय राम राज पुत्र स्वर्गीय रघुनंदन यादव के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया। सेनानियों के घरों पर राष्ट्रीय ध्वज भी लगाया गया तथा परिजनों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

इस कार्यक्रम में पूर्व एमएलसी लल्लन प्रसाद यादव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री श्रीराम यादव समेत स्वर्गीय सेनानियों के परिजन श्री जय कुमार पुत्र स्वर्गीय भगेलू राम एवं बाबूराम पुत्र स्वर्गीय रामराज यादव ग्राम एवं आसपास के सैकड़ों नागरिकों ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सम्मान में पुष्पांजलि अर्पित की एवं उनके संघर्षों को याद किया गया।

फोटो फीचर

तिरंगा अभियान

9 से 15 अगस्त

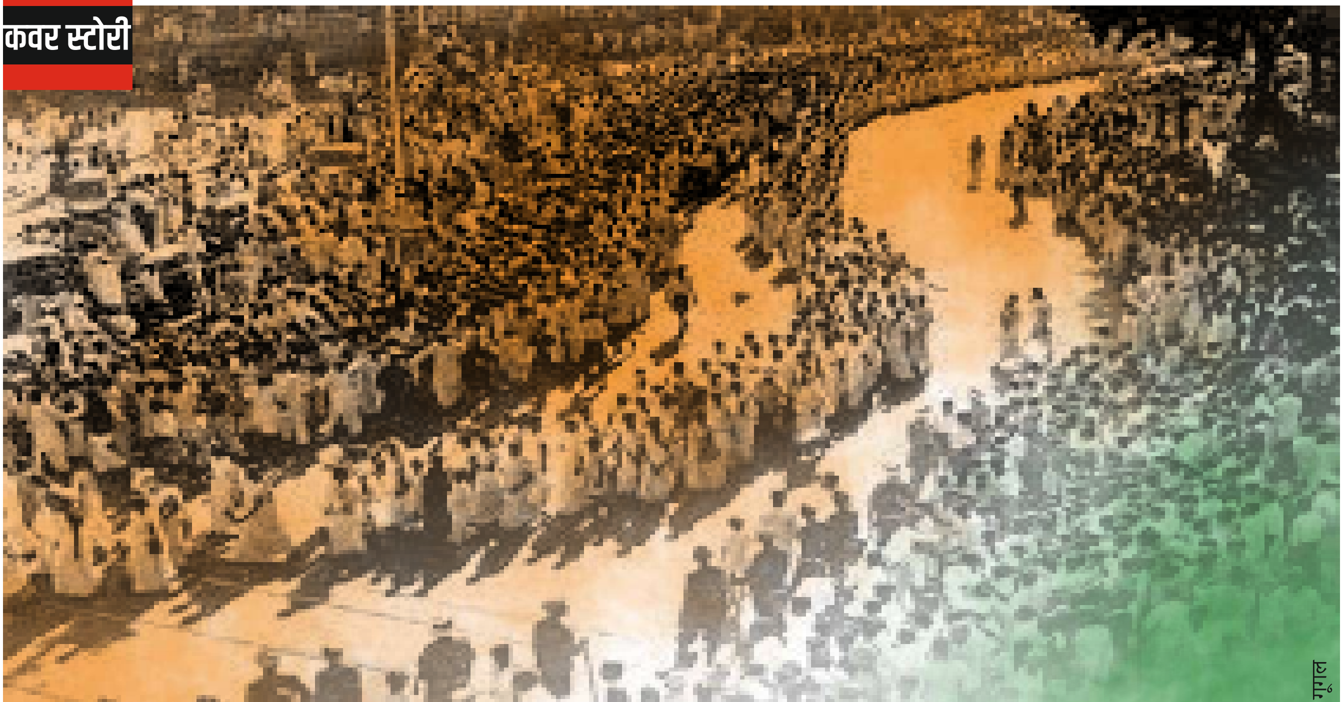

फोटो स्रोत : गूगल

अगस्त क्रांति और समाजवादी आंदोलन

जयशंकर पाण्डेय

भारतीय समाजवाद के इतिहास में अगस्त और अक्टूबर का महीना विशेष रूप से महत्व रखता है। अगस्त के महीने में शुरू हुए भारत छोड़ो आंदोलन में समाजवादियों का वैचारिक और राजनीतिक योगदान अद्वितीय है और अक्टूबर का महीना महात्मा गांधी के साथ आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण और डॉ राममनोहर लोहिया के निजी जीवन (जन्मतिथि और पुण्यतिथि के रूप में) जुड़ा हुआ है।

हालांकि इसका मतलब यह नहीं कि बाकी महीने उनकी सक्रियता और स्वप्नदर्शिता से अलग हैं क्योंकि समाजवादी होने का मतलब है निरन्तर अन्याय के विरूद्ध संघर्ष और समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के लक्ष्य को लेकर एक ऐसे समाज का निर्माण करना जहां ऐसे मूल्य निश्चिंत होकर पनप सकें और ऐसा मनुष्य बनाना जो इन मूल्यों को जीते हुए अपनी आत्मसिद्धि कर सके। इसलिए समाजवादी होने की पहचान निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील रहना है ताकि नई स्थितियों में अपने सपनों और मूल्यों को बचाकर रखा जा सके।

आजादी के अमृत महोत्सव के इस मौके

पर सरकार और सत्तारूढ़ दल का जोर तिरंगा यात्रा निकालने और तिरंगा फहराने पर रहा। अच्छा है अपनी महान विरासत को याद करना और उसे उत्सव का रूप देना। लेकिन उससे भी कहीं ज्यादा जरूरी है कि उस विरासत को समझना और उसे वोट बैंक की राजनीति से निकाल कर आगे ले जाना। सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होने से पहले महात्मा गांधी दूसरे विश्व युद्ध में अंग्रेजों का साथ दे रहे थे।

उन्हें लगता था कि हिटलर और मुसोलिनी के विरूद्ध अंग्रेज लोकतंत्र के नज़दीक हैं इसलिए उनका साथ देना चाहिए। हिटलर ने अन्यायपूर्ण युद्ध थोपा है इसलिए उसके विरूद्ध लड़ने वालों का साथ देना चाहिए। ऐसा करने से भारत को आजादी का वचन मिल जाएगा। लेकिन अंग्रेज भले ही उस युद्ध को विश्व युद्ध का नाम दें पर वह था यूरोपीय साम्राज्यवादियों के बीच का ही युद्ध। भले उसके परिणाम भारत और दुनिया के दूसरे देशों की आजादी के रूप में निकले हों लेकिन वह था तो अपने साम्राज्य को बचाने और अपने साम्राज्य को फैलाने वाला ही युद्ध।

उस युद्ध में भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध और उसके सपनों का क्या किया जाए इस बारे में पंडित जवाहर लाल नेहरू भी बहुत भ्रमित थे। वे ऐसा कोई आंदोलन नहीं करना चाहते थे जो सोवियत संघ के विरोध में जाए या अमेरिका से टकराने की स्थिति पैदा करे। सुभाष बाबू जरूर संघर्ष चाहते थे लेकिन इटली और जर्मनी से सम्पर्क रखने के कारण वे उनकी सहायता लेना चाहते थे और उनके संघर्ष के तरीके पूरी तरह हिंसक थे। वे सेना बनाकर लड़ना चाहते थे।

कम्युनिस्टों को जनयुद्ध और साम्राज्यवादी युद्ध के बीच भ्रम था और इसलिए वे उसी देश के साथ रहना चाहते थे जहां पर सोवियत संघ खड़ा था। यानी अंग्रेजों के साथ। उधर डॉ भीमराव आंबेडकर वायसराय की कार्यपरिषद के सदस्य थे और तीन मंत्रालय संभाल रहे थे। जबकि हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मुसलमानों के विरूद्ध हिन्दू राज्य कायम करने के लिए अंग्रेजों के साथ खड़े थे।

भयानक भ्रम की ऐसी स्थिति में दो चीजों ने कुहासे को छांटने का काम किया। एक थी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों के बारे में समाजवादियों की चिंतन दृष्टि और दूसरी थी महात्मा गांधी की अंतस्चेतना। आचार्य नरेन्द्र देव ने अपनी तीक्ष्ण विश्लेषण दृष्टि से यह स्पष्ट किया कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों के अनुरूप भारत अपनी भूमिका तभी निभा सकता है जब वह स्वतंत्र हो। इसलिए गुलाम देश को अपनी राष्ट्रीय मुक्ति पर ज्यादा जोर देना चाहिए। इसी सिद्धांत के कारण समाजवाद में यकीन करते हुए भी समाजवादी महात्मा गांधी के साथ सदैव खड़े रहे।

इसी सैद्धांतिक दृष्टि के कारण समाजवादी

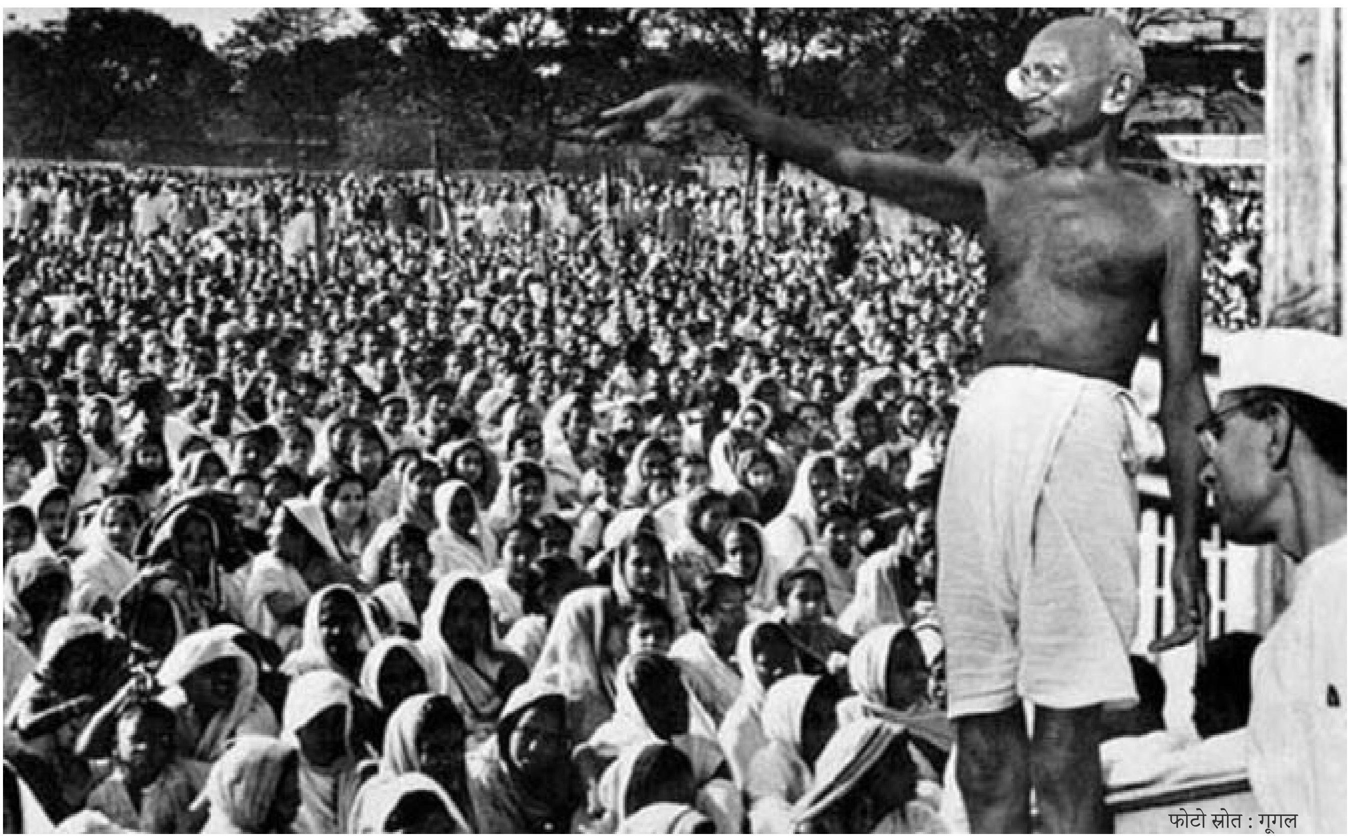

फोटो स्रोत : गूगल

गांधी जी को यह समझाने में सफल रहे कि उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध अंतिम युद्ध छेड़ना चाहिए। यानी महात्मा गांधी को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के भ्रम से निकालने में समाजवादियों का विशेष योगदान रहा।

दूसरी बात थी साधन की पवित्रता की। सदैव अहिंसा पर जोर देने वाले और असहयोग आंदोलन को चौरी चौरा की हिंसा के कारण वापस ले लेने वाले गांधी ने इस आंदोलन को हिंसा के बावजूद वापस नहीं लिया। जब अंग्रेजों ने आरोप लगाया कि समाजवादी लोग टेलीफोन के खम्भे उखाड़ रहे हैं, जेलों से निकलकर भाग रहे हैं और रेल की पटरियां उखाड़ रहे हैं और अपने लोगों को छुड़ाने के लिए हथियारबंद संघर्ष कर रहे हैं, गुप्त रेडियो चला रहे हैं, गांधी पहले चुप रहे। फिर उन्होंने कहा कि आपने तो मुझे जेल में डाल रखा है, मैं किसी को नेतृत्व कैसे दे सकता हूँ। जनता स्वतंत्र हो चुकी है और वह अब आपको बर्दाश्त नहीं करेगी।

जयप्रकाश नारायण जेल कूद कर भागे थे। उन्हें नेपाल से गिरफ्तार किया गया। उनकी गिरफ्तारी से पहले समाजवादी विचारधारा के स्वतंत्रता सेनानियों ने हथियारबंद जत्था बना रखा था जिसने थाने पर हमला करके एक बार उन्हें छुड़ाया भी। गिरफ्तारी से पहले डॉ राम मनोहर लोहिया, अरुणा आशफ अली और विजया पटवर्धन ने महाराष्ट्र में भूमिगत रेडियो चलाया और आंदोलन की खबरों को जनता तक पहुंचाया।

जयप्रकाश नारायण और डॉ राममनोहर लोहिया को अलग-अलग गिरफ्तार किया गया लेकिन उन्हें लाहौर के केन्द्रीय जेल में ले जाया गया। उन्हें वैसी ही यातना दी गई जैसी यातना भगत सिंह को दी गई थी। आजादी की लड़ाई में वे फांसी के तख्ते पर तो नहीं चढ़े लेकिन भगत सिंह की कोठरी में रह कर कठोर यातना झेल कर आजादी के वैसे ही दीवाने बन गए।

समाजवादियों ने गांधी के प्रभाव में अपने को बदला और बाद में उन्होंने स्वतंत्र भारत में समाजवाद लाने के लिए अहिंसक संघर्ष का संकल्प लिया। लोहिया ने जेल, फावड़ा और वोट जैसे हथियार देकर देश की जनता का आह्वान किया कि वह हर तरह से अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करे। वे लोकतंत्र में यकीन करते थे और चुनाव लड़कर समाज और राजनीति को बदलने की कोशिश करते थे। लेकिन इसी के साथ वे यह भी मानते थे कि हर पांच साल पर वोट देकर बैठ जाने से न तो अन्याय मिटता है और न ही अच्छे कामों की गारन्टी हो पाती है।

फोटो स्रोत : गूगल

इसलिए सिविल नाफरमानी का आंदोलन दो चुनावों के बीच चलते रहना चाहिए। क्योंकि अगर अन्याय जारी रहा तो वोट बेकार हो जाएगा और गोली हावी हो जाएगी। क्योंकि समाज में हिंसा और अहिंसा के बीच निरंतर द्वंद्व चलता रहता है। समाज ने अपनी रक्षा के लिए राज्य को सीमित हिंसा की छूट दी है लेकिन अगर राज्य जनता के जायज आंदोलनों को दबाने के लिए हिंसा का प्रयोग करता है तो वह अनैतिक और अवैध हिंसा हो जाती है।

इसी के साथ समाजवादियों ने फावड़ा का उपकरण भी दिया है। वह उपकरण है रचनात्मक कर्म का। रचनात्मक कर्म सिर्फ सत्ता में रहने पर ही नहीं होता उसे विपक्ष में रहने पर भी जारी रखना चाहिए। समाजवादियों ने अन्याय से लड़ने वाले जांबाज योद्धा पैदा किए हैं। यह बात सही है कि 1942 तक वे हिंसा और अहिंसा को लेकर ज्यादा विवाद नहीं करते थे लेकिन गांधी के प्रभाव में उनके लिए साधन की पवित्रता महत्वपूर्ण हो गई। उन्होंने एक समतामूलक और न्याय पर आधारित समाज बनाने के साध्य को न कभी छोड़ा था और न कभी छोड़ेंगे।

रचनात्मक कर्म सिर्फ सत्ता में रहने पर ही नहीं होता उसे विपक्ष में रहने पर भी जारी रखना चाहिए। समाजवादियों ने अन्याय से लड़ने वाले जांबाज योद्धा पैदा किए हैं। 1942 तक वे हिंसा और अहिंसा को लेकर ज्यादा विवाद नहीं करते थे लेकिन गांधी के प्रभाव में उनके लिए साधन की पवित्रता महत्वपूर्ण हो गई

दुनिया में पूंजीवादी व्यवस्था का अन्याय तीव्र हो उठा है। वह किसानों, मजदूरों, आदिवासियों के हक़ छीन रही है उनके हक में लड़ने वाली शक्तियों का दमन कर रही है। लेकिन इसी के साथ प्रतिरोध की शक्तियां भी उठ खड़ी हो रही हैं। समाजवादी आंदोलनजीवी नहीं हैं वे आंदोलनकारी हैं और स्वप्नद्रष्टा हैं। आजादी का अमृत महोत्सव उनके कठिन संघर्षों से आया है और उन्हें अपनी इस महान विरासत को जीने के साथ उसे बचाने के लिए खड़ा होना ही पड़ेगा।

(लेखक समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक हैं)

काफिले आते रहे और हिन्दुस्तां बनता रहा

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारत का विचार गहरे मंथन से गुजर रहा है। एक ओर तो वह विचार है जिसे फिराक साहब ने कुछ इस तरह व्यक्त किया हैः---

सर जमीन-ए-हिंद पर
अक़्वामे आलम के फिराक
काफिले आते रहे और
हिन्दुस्तां बनता गया

यानी भारत ने किसी को पराया माना ही नहीं। जो भी यहां आया यहां का होकर रह गया। न तो बाहर से आने वालों ने यहां पहले से रह रहे लोगों का सफाया किया और न ही यहां पहले से बसे लोगों ने बाहर से आए लोगों को लंबे समय तक परदेसी माना। परदेसी उन्हें जरूर माना गया जो शासन यहां करते थे और तिजोरी किसी और देश की भरते थे। चाहे वे विदेशी लुटेरे रहे हों या फिर विदेशी फरमानों और सेनाओं के बल पर यहां शासन कर रहे अंग्रेज और दूसरे

यूरोपीय लोग हों।

यही कारण है कि भारत ने मुट्ठी भर (60 हजार से एक लाख तक की संख्या वाले) अंग्रेजों को परदेसी माना और उन्हें यह देश छोड़कर जाने को मजबूर कर दिया। लेकिन एक बात ध्यान रहे कि भारत की आजादी की लड़ाई के अग्रणी नेता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अंग्रेजों से घृणा के कतई हिमायती नहीं थे।

जब उन्होंने 8 अगस्त 1942 की रात को बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में `अंग्रेजों भारत छोड़ो' और `करेंगे या मरेंगे' का नारा दिया तो यह भी कहा कि वे लोग इस आंदोलन से अलग रहें जो सांप्रदायिक तरीके से सोचते हैं और जो अंग्रेजों से नफरत करते हैं। वे नौ अगस्त को गिरफ्तार हुए और आगा खां पैलेस में नजरबंद किए गए। पांच दिन बाद ही उनके निजी सचिव महादेव देसाई का निधन हो गया। वे महज 50 वर्ष के थे और महात्मा गांधी और कस्तूरबा उन्हें बेटे की तरह मानते थे।

उनके निधन से कस्तूरबा हिल गईं। उन्होंने गांधी से कहा कि मैं मना कर रही थी कि ऐसा आंदोलन न छेड़िए। देख लिया क्या हो रहा है? भारत बहुत बड़ा देश है, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि अंग्रेज इसी देश में रह जाएं जहां तमाम तरह के लोग रहते हैं? गांधी ने कहा हो सकता है हमें उनके यहां रहने से कोई दिक्कत नहीं है पर वे हमारे शासक बन कर न रहें। गांधी भारत के इसी विचार के हिमायती थे और यही प्रादेशिक राष्ट्रवाद है। इसलिए वे कहते थे कि अगर मेरा बड़ा बेटा हरिलाल मुसलमान हो गया तो क्या वह दूसरे देश का नागरिक हो जाएगा? ऐसे ही इस देश के तमाम मुसलमान पहले तो हिंदू ही थे। इसी के तहत स्वतंत्र भारत में समाज के विभिन्न तबकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय देने का वादा किया गया है और व्यक्ति को गरिमा प्रदान करने के साथ राष्ट्र की एकता और अखंडता का वादा किया गया है। ध्यान रहे कि यह सब हम भारत के लोगों ने किया है और उसी ने भारत को एक संप्रभु राष्ट्र भी बनाया है।

आजादी के अमृत महोत्सव के इस मौके पर भारत में बसे विभिन्न काफिलों की परतों में हलचल हो रही है। जब दबाव ज्यादा बढ़ जाता है तो हलचल तीव्र हो जाती है। वही भूकंप है। वह भूकंप जो 1947 में आया था और अगर आज की स्थितियों में संतुलन न लाया गया तो फिर किसी रूप में प्रकट हो सकता है

इसके ठीक विपरीत एक ऐसे भारत का विचार आज तैर रहा है जिसके तहत इस देश के बहुसंख्यक समाज के कुछ धार्मिक संगठन अलग संविधान तैयार कर रहे हैं। उनके उस संविधान में अल्पसंख्यक समाज को वोट का अधिकार नहीं होगा। कभी कभी इससे अलग तो कभी इसी के साथ एक और धारा जुड़ जाती है कि आज भारत को इस्लाम और ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त करके सनातन धर्म की परंपरा से व्याख्यायित करने की जरूरत है।

भारत का एक तीसरा विचार भी है जो यहां अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं और वैश्विक पूंजी के सहयोग से तीव्र गति से आर्थिक सुधार चाहता है और भारत को दुनिया के समृद्ध देशों की कतार में खड़ा करना चाहता है। लेकिन वह इन सामाजिक सद्भाव के मुद्दों पर चुप ही रहता है।

आजादी के अमृत महोत्सव के इस मौके पर भारत में बसे विभिन्न काफिलों की परतों में हलचल हो रही है। जब दबाव ज्यादा बढ़ जाता है तो हलचल तीव्र हो जाती है। वही भूकंप है। वह भूकंप जो 1947 में आया था और अगर आज की स्थितियों में संतुलन न लाया गया तो फिर किसी रूप में प्रकट हो सकता है। उसी भूकंप के बारे में राजमोहन गांधी अपनी पुस्तक ` कान्फ्लिक्ट एंड रिकान्सिलिएशन्स' में लिखते हैं कि इस उपमहाद्वीप के आसमान में दस लाख अतृप्त आत्माएं मंडरा रही हैं जब उन्हें शांति नहीं मिलेगी तब तक यह उपमहाद्वीप शांत नहीं होगा।

भारत का विभाजन दुर्भाग्यपूर्ण था और देश का धर्म के आधार पर बंटना भारत के विचार को गहरा जख्म दे गया है। लेकिन 1971 में पाकिस्तान के विभाजन के साथ हम देख चुके हैं कि वह कितना कृत्रिम था। संभव है कि अगर विभाजन न होता तो हम आपस में टकराते रहते लेकिन जब भी हम शांत होते तो भारत के वास्तविक विचार के साथ खड़े होते। वही विचार जहां हिंदुस्तान की सरजमीं पर पूरी दुनिया से काफिले आते रहे बसते रहे और विविध धर्मों, आस्थाओं, भाषाओं और संस्कृतियों का एक सुंदर गुलदस्ता उसी तरह बन गया जिस तरह तमाम नदियां हिंद महासागर में मिलती हैं।

सन 1947 में खंडित हुए भारत में भी उस विचार को गांधी, नेहरू, मौलाना आजाद और सरदार पटेल ने भी बचाकर रखने की कोशिश की। उसी का नतीजा था डॉ आंबेडकर की मेधा से भारत को दिया गया एक संविधान। डॉ आंबेडकर ने संविधान को अंगीकार किए जाते समय कहा था कि आज से भारत राजनीतिक समता के एक नए युग में प्रवेश करने जा रहा है जो इससे पहले भारत में कभी नहीं थी। लेकिन उसी के साथ देश में सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भारी असमानता है। अगर उसे नहीं मिटाया गया तो यह राजनीतिक समता भी खतरे में रहेगी।

डा आंबेडकर ने यह भी कहा था कि भारत कभी कभी साम्राज्य के रूप में एक रहा है लेकिन अधिकतर समय वह छोटे छोटे राज्यों में विभक्त भी रहा है। इतनी भाषाओं, इतनी संस्कृतियों और इतने धर्मों को लेकर बनाया जाने वाला राष्ट्र तभी चल सकता है जब उसके पास एक संविधान हो और लोग अपनी धार्मिक पुस्तकों से ज्यादा उसका आदर करें। यानी वह राष्ट्र के सवाल पर अन्य तमाम ग्रंथों से ऊपर हो। वे यह जरूर मानते थे कि मुसलमान तो एक राष्ट्र हो सकते हैं लेकिन हिंदू एक राष्ट्र के रूप में व्यवस्थित नहीं हैं। वे भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के विरुद्ध चेतावनी भी देते हैं। उनका कहना था किः----अगर हिंदू राज एक वास्तविकता बना तो निस्संदेह वह इस देश के लिए सबसे बड़ी आपदा के रूप में सामने आएगा। हिंदू राज को हर कीमत पर रोका जाना चाहिए।(पाकिस्तान आर पार्टीशन आफ इंडिया 1946, पृ.354-5)।

भारत को संविधान दिए जाते समय उन्हें इस बात का अहसास था कि उसका बहुत सारा स्वरूप दुनिया के दूसरे देशों से लिया गया है। कुछ हिस्सा ब्रिटेन, कुछ आस्ट्रेलिया, तो कुछ कनाडा से। लेकिन उसके पीछे नब्बे साल तक चले स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा है। उसके पीछे क्रांतिकारियों का बलिदान है तो सत्याग्रहियों का त्याग है। उसके पीछे लाखों स्त्री पुरुषों का संघर्ष है तो करोड़ों लोगों के सपने हैं। उससे भीतर भारत की आत्मा है और उसके भीतर महात्मा गांधी का अंतःकरण है। इसीलिए उन्होंने यह दर्शाने का प्रयास भी किया था कि इसके कई महान मूल्यों की प्रेरणा भारत के अपने इतिहास से ली गई है। उन्होंने भारत के बौद्ध कालीन गणतंत्र का स्मरण दिलाया था तो यह भी कहा था कि बंधुत्व का मूल्य हमने फ्रांस की राज्य क्रांति की फ्रेटर्निटी से नहीं बल्कि बुद्ध की मैत्री से लिया है।

स्वतंत्रता की लड़ाई किसी राज्य ने नहीं इस देश की जनता ने लड़ी थी। निश्चित तौर पर जनता की लड़ाई एक ओर अंग्रेजी राज से अलग अपना स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए थी तो दूसरी ओर अपनी स्वतंत्रता के लिए भी थी

यह देखना अपने आप में विचित्र लगता है कि कुछ विद्वान भारत के संविधान को आजादी के आंदोलन के संदर्भ से काटकर उसे कुछ लोगों की विशेष रचना मानते हैं। जबकि वास्तव में वह स्वतंत्रता संघर्ष के महामंथन का प्रतिफल है। अगर राष्ट्र का विभाजन भारत के स्वाधीनता संग्राम से निकला विष है तो संविधान उससे निकला अमृत है। भारत के स्वतंत्रता दिवस पर यह स्मरण दिलाना बहुत जरूरी है कि आज भारत अमृत छोड़कर विषपान की ओर लालायित है।

स्वतंत्रता की लड़ाई किसी राज्य ने नहीं इस देश की जनता ने लड़ी थी। निश्चित तौर पर जनता की लड़ाई एक ओर अंग्रेजी राज से अलग अपना स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए थी तो दूसरी ओर अपनी स्वतंत्रता के लिए भी थी। जिस स्वराज को तमाम नेता अब सुराज बनाने पर तुले हैं वे स्वराज का वास्तविक अर्थ ही नहीं जानते। उसके अर्थ को एक हद तक महात्मा गांधी ने `हिंद स्वराज' में परिभाषित किया है। लेकिन 1909 में लिखी गई इस महान पुस्तक के अलावा भी उन्होंने समय समय पर स्वराज को परिभाषित किया है। वे भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र राज्य के साथ उदित होते देखना चाहते थे लेकिन उससे कम चिंता अपने नागरिकों को स्वतंत्र देखने की नहीं थी।

इसलिए उनकी स्वराज और रामराज्य की परिभाषाएं गौर करने लायक हैं। स्वराज का उनके लिए यही अर्थ था कि आपका अपने ऊपर अपना नियंत्रण हो। किसी सरकारी मशीनरी के नियंत्रण को वे स्वराज के विरुद्ध मानते थे। उनका स्पष्ट कहना था कि स्वराज का अर्थ यह कतई नहीं है कि अंग्रेज पूंजीपति और अंग्रेजी फौजें भारत से चली जाएं और उनकी जगह पर भारतीय पूंजीपति और फौजें लोगों पर शासन करने लगें। ऐसा हुआ तो यह स्वराज नहीं होगा। लेकिन क्या आज वैसा ही नहीं हो रहा है?

फोटो स्रोत : गूगल

इसी तरह रामराज्य के बारे में उनका साफ कहना था कि "रामराज्य का जिक्र मैं जब भी करता हूं तो उसका मतलब यह नहीं होता कि अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र भगवान राम का शासन। मैं इस प्रत्यय का प्रयोग इसलिए करता हूं कि इसे जनता आसानी से एक अच्छी शासन प्रणाली के रूप में समझ जाती है। लेकिन मेरे लिए उसका व्यापक अर्थ है। उसका मतलब तालस्ताय के किंगडम आफ गॉड से है, रैदास के बेगमपुरा से है और इस्लाम में वर्णित खलीफा के उस शासन से है जहां लाखों दीनार कर के रूप में इकट्ठा होने के बावजूद खलीफा एक फकीर की तरह रहते थे।"

भारत की संविधान सभा में जो संस्थाएं बनाई गईं और नागरिकों को जो अधिकार दिए गए उनके बीच एक किस्म का संतुलन बनाया गया। केंद्र और राज्य में मजबूत संस्थाएं इसलिए बनाई गईं क्योंकि लंबे संघर्ष और विभाजन की भयानक त्रासदी के बाद भारतीय जनता को अपना राष्ट्र मिला था इसलिए उसकी रक्षा मजबूत राज्य के माध्यम से ही की जा सकती थी। लेकिन उसी के साथ यह भी सोचा गया था कि मजबूत राज्य कहीं आम आदमी के अधिकार को कुचल न दे इसलिए मौलिक अधिकारों की पुख्ता व्यवस्था की गई और न्यायपालिका को उसका रक्षक बनाया गया।

भारतीय संविधान के दो घोषित उद्देश्य थे। एक तो राष्ट्र की एकता और अखंडता और दूसरा सामाजिक क्रांति। एकता अखंडता के लिए मजबूत संस्थाएं दी गईं और सामाजिक क्रांति के लिए मौलिक अधिकार और नीति निदेशक तत्व दिए गए।

आज जब हम मौजूदा स्थितियों को देखते हैं तो पाते हैं कि भारत उन मानकों पर घिसट रहा है जिनके आधार पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकतंत्र का मूल्यांकन किया जाता है। विश्व प्रेस सूचकांक में भारत की स्थिति 142 वीं है। आज देश में एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास राष्ट्रीय आय का 22 प्रतिशत है। जबकि 50 प्रतिशत गरीबों के पास राष्ट्रीय आय का महज 13 प्रतिशत है। असमानता का यह सूचकांक ज्यादा बढ़ेगा तो देश में आंतरिक तनाव बढ़ेगा ही। उसे दूर करने के लिए सरकारें कल्याणकारी योजनाएं चलाएंगी और लोगों को मुफ्त भोजन, दवा और शिक्षा देंगी।लेकिन जब उससे घाटा बढ़ने लगेगा तो वे रेवड़ी बनाम वास्तविक कल्याण योजनाओं की बहस छेड़ेंगी। जबकि पूंजीपतियों के कर और

ऋण माफ करती रहेंगी।

डॉ आंबेडकर ने यह बात बार बार कही थी कि संविधान कितना भी अच्छा हो अगर उसे चलाने वाले लोग अच्छे नहीं हैं तो वह प्रभावहीन हो जाएगा। कोई भी देश अनैतिकता और अन्याय करते हुए आगे नहीं बढ़ सकता। वह आंतरिक रूप से बेचैन रहेगा और बाहरी दुनिया में अपनी छवि को खोएगा। गांधी आंबेडकर और स्वतंत्रता आंदोलन के तमाम नेताओं से हमें यही सीख मिलती है कि कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए। न्याय का अर्थ भी यही है कि जो व्यवहार आप अपने साथ चाहते हैं वही दूसरों के साथ करें तब तो न्याय है और जो आप अपने साथ नहीं चाहते हैं वैसा दूसरों के साथ करते हैं तो वह अन्याय है।

आज हम एक ऐसे राष्ट्र के रूप में उभर रहे हैं जहां एक ओर तो प्रधानमंत्री भारत के मुख्य न्यायाधीश से कहते हैं कि विचाराधीन कैदियों की संख्या हमारे लिए चिंताजनक है। उन्हें कम किया जाना चाहिए तो दूसरी ओर मुख्य न्यायाधीश उनसे कहते हैं कि हमारी विधायिका बिना विचारे हुए तेजी से कानून बना देती है जिसके कारण न्यायपालिका को कठिनाई पेश आती है। उधर 2016 से लेकर 2020 के बीच यूएपीए कानून के तहत 24,000 लोग गिरफ्तार किए जाते हैं। उन्हें महीनों क्या सालों से जमानत नसीब नहीं हो रही है।

न्यायपालिकाएं बार-बार कहती हैं कि जमानत नियम होना चाहिए और गिरफ्तारी अपवाद। लेकिन गिरफ्तारी नियम बन रही है और जमानत अपवाद। एक ओर थानों में पिटाई सामान्य चलन होता जा रहा है तो दूसरी ओर बुलडोजर न्याय की परंपरा स्थापित होती जा रही है। प्रदर्शन और आंदोलन करने पर संपत्ति की कुर्की की नोटिसें वैसी ही दी जा रही हैं जैसे ब्रिटिश राज के दौरान दी जाती थीं।ईडी और सीबीआई के हौसले बुलंद हैं। वे विपक्षी दलों के नेताओं को चुन चुन कर परेशान कर रहे हैं।

जब लोकतंत्र में सारे छापे विपक्ष के ही खाते में आते हैं और सारे भ्रष्टाचार उन्हीं के हाथों होते हुए बताए जाते हैं तो जाहिर होता है कि सत्ता में बैठे हुए लोगों का ध्येय भ्रष्टाचार मिटाने से ज्यादा विपक्ष को नेस्तनाबूद करना है। जाहिर सी बात है कि विपक्ष को नेस्तनाबूद करने का मतलब लोकतंत्र को भी नेस्तनाबूद करने से है। जनता अगर कुछ संकेत देती है तो उसे भी पलट देने की तैयारी

इन्हीं जांच एजेंसियों के माध्यम से किया जाता है। ऐसी स्थिति में कौन विपक्षी नेता सरकार बनाने का साहस करेगा या सरकार बन जाने के बाद कौन मुख्यधारा से अलग निर्णय लेगा।

वास्तव में मामला लोकतंत्र बनाम राष्ट्रीय एकता का बना दिया गया है। जो लोकतंत्र की बात करता है, मानवाधिकारों की बात करता है उसे राष्ट्रीय एकता का शत्रु बताया जाता है और देशद्रोही साबित कर दिया जाता है। मीडिया को विपक्ष के विरुद्ध सेना की तरह मुस्तैद कर दिया गया है। मीडिया ट्रायल आम हो चला है। कांग्रेस मुक्त भारत की बात तो पुरानी हो चली है अब तो क्षेत्रीय दलों से मुक्त भारत की बात आ चली है। जबकि डॉ भीमराव आंबेडकर ने साफ शब्दों में कहा है कि बिना मजबूत विपक्ष के लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती।

सबसे बड़ा खतरा धार्मिक कट्टरता और धर्म के प्रतिस्पर्धी आख्यान से है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भारत में आज जितने खतरे हैं उतने स्वतंत्र भारत में तो कभी नहीं रहे। वह खतरे मध्ययुग में भी इतने नहीं थे और प्राचीन भारत में तो शायद और भी कम थे। अगर होते तो इतना विपुल सांस्कृतिक भंडार उत्पादित न होता। किसी भी लोकतंत्र की कसौटी उसके बहुसंख्यक समुदायों के अधिकार नहीं होते बल्कि अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकार होते हैं। अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकारों की गारंटी तुष्टीकरण नहीं है, वह लोकतंत्र होने की गारंटी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सोशल मीडिया पर अपना डीपी बदल कर तिरंगे का डीपी लगाया लेकिन आरएसएस में आते बदलावों को देखते हुए भी लोग आश्वस्त नहीं हैं। वे इसे क्षणिक मानते हैं। सवाल उठता है कि अगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समावेशी है तो उससे जुड़े तमाम संगठन नफरत और हिंसा का प्रसार क्यों करते हैं। उसके चरित्र पर जो शंका पंडित नेहरू ने जताई थी उसी को आज भी तमाम लोग जताते हैं। पंडित नेहरू ने 10 नवंबर 1948 को संघ प्रमुख एमएस गोलवलकर को लिखे पत्र में कहा था, `` ऐसा लगता है कि (आरएसएस का) घोषित उद्देश्य का वास्तविक उद्देश्य और संघ से जुड़े तमाम लोगों की गतिविधियों से कोई लेना देना नहीं है। लगता है कि वास्तविक उद्देश्य

भारतीयता की खोज करने वाले तमाम लोगों का तो यह भी कहना है कि अगर अंग्रेजों ने भारत की आत्मा को यूरोप की योजना के तहत कैद किया तो इन दिनों भारत की वास्तविक आत्मा पर एक प्रतिछाया आरोपित की जा रही है

भारतीय संसद और संविधान के प्रावधानों से पूरी तरह विपरीत है। हमारी सूचनाओं के अनुसार जो गतिविधियां हैं वे राष्ट्रद्रोही हैं और अक्सर विध्वंसकारी और हिंसक हैं।"

भारत में इस्लाम के मानने वालों की बड़ी आबादी होने के बावजूद खतरनाक आतंकी संगठनों की उपस्थिति नगण्य है। इसके बावजूद कुछ बयानों और उसे सोशल मीडिया पर पसंद करने के आधार पर किसी का गला काटना एक नृशंस घटना है। ऐसी तमाम कार्रवाइयां और धमकियां कट्टरता को पोषित करती हैं और स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती हैं।

भारतीयता की खोज करने वाले तमाम लोगों का तो यह भी कहना है कि अगर अंग्रेजों ने भारत की आत्मा को यूरोप की योजना के तहत कैद किया तो इन दिनों भारत की वास्तविक आत्मा पर एक प्रतिछाया आरोपित की जा रही है। ऐसे में जो भारत की आत्मा के साथ हैं उनकी स्वतंत्रता का हरण किया जा रहा है। राज्य की सुरक्षा राष्ट्र की सुरक्षा बन गई है। हमारा पूरा राज्य नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा के दायित्व को भूल कर चंद लोगों की सुरक्षा में लग गया है।

इसलिए स्वतंत्रता का यह अमृत महोत्सव हम सभी को तभी मुबारक हो सकता है जब हम भारत की उस आत्मछवि को प्राप्त करें जिसे महात्मा गांधी और भारत के तमाम मनीषियों ने अपने आचरण से दुनिया के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है। भारत की इसी आत्मछवि के माध्यम से ही उसके नागरिक आत्मसिद्धि (Self realization) कर सकेंगे और तभी आजादी का अमृत बरसेगा।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

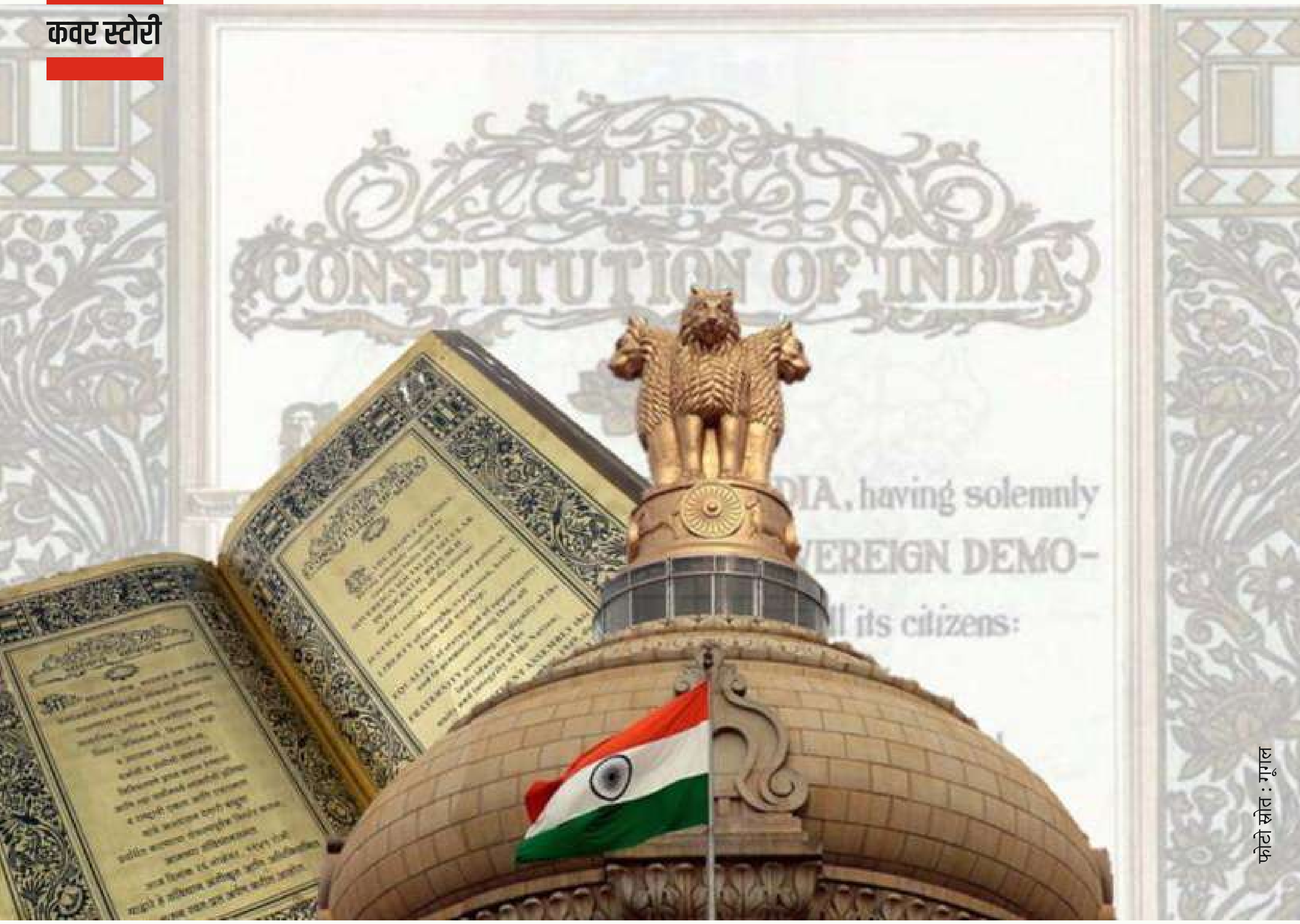

फोटो स्रोत : गूगल

अमृतोत्सव

शान और शर्म में शह-मात

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

आजादी का अमृतोत्सव की धूम रही। होनी भी चाहिए। हमारी आजादी खास है, हमारी आजादी की लड़ाई खास है, हमारे नायक खास थे और हिंदुस्तान से आगे बढ़ाकर उनका प्रभाव दुनिया भर में गया। हमारी चुनौतियां खास रही हैं और कई मायनों में हमारी उपलब्धियां भी खास रही हैं।

हमने 1972 और 1997 में आजादी की रजत जयंती और स्वर्ण जयंती भी बहुत उत्साह से मनाई थी, कई बड़ी योजनाएं शुरू की गई थीं। आज की सरकार और उसके पीछे बैठे संघ परिवार ने शोर बहुत मचाया लेकिन कोई बड़ा कार्यक्रम सामने नहीं आया। इस सरकार का या आज मुल्क के शासन पर हावी जमात का न तो आजादी की लड़ाई से कोई लेना देना था, न उसने मुल्क की तस्वीर सुधारने में कोई भूमिका निभाई है।

शुरुआत तो सवा साल पहले हुई थी लेकिन साल भर सरकार उसे भुलाए ही रही। इस बीच गांधी की छवि धूमिल करने, नेहरू को बिसारने, जेपी-लोहिया को हाशिए पर डालने और आजादी के संघर्ष को खंडित और विभाजित बताने तथा अपने सावरकर जैसे नकली नायकों को प्रतिष्ठित करने का छल भी चला गया। आजादी की लड़ाई को भी हिन्दू-मुसलमान बंटवारे में इस्तेमाल करने के लिए पंद्रह अगस्त से ठीक पहले प्रधानमंत्री की अगुआई में बाकायदा विभाजन को याद करने का कार्यक्रम चला। कहीं हिन्दू-मुसलमान एकता वाला बल दिखाई न दे इसलिए साल 2021 में 1921 के असहयोग आंदोलन को भुलाकर मई से नमक सत्याग्रह को याद करके अमृत महोत्सव की शुरुआत की गई। इस तरह की 'शरारतें' और बदमाशियां अनगिनत थीं, पर हम उनको गिनवा कर आजादी के पचहत्तरवें साल के स्वाद को कड़वा नहीं करेंगे। हमारा उद्देश्य इन वर्षों की उपलब्धियों को रेखांकित करने के साथ विफलताओं की चर्चा करना और उन खतरों की तरफ इशारा करना है जो इस बीच हमारे यहां सिर उठा चुके हैं।

देश का एक रहना और मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरना हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है। अंग्रेजी हुकूमत के असंख्य लोग, जिसमें चर्चिल आखिरी महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, यह बार-बार दावा करते थे कि भारत असंख्य जातियों, धर्मों, भाषाओं वाले लोगों का बिखरा हुआ प्रदेश था जिसे इतिहास में पहली बार एक देश के रूप में लाने का काम अंग्रेजी हुकूमत ने ही किया है लेकिन दादा भाई से लेकर गांधी तक यही कहते थे कि हमारी अनेकता में एकता वाली धारणा है और उपनिषद काल से आसेतु हिमालय की अवधारणा हमारे राष्ट्र को परिभाषित करती है।

हां, इस दावे के साथ हमारे नेता लगातार उन सभी विभाजनकारी सवालों पर भी सक्रिय रहे जबकि अंग्रेजी शासन बांटो और राज करो के नाम पर हर विभाजक तत्व को बढ़ावा देता रहा। मुस्लिम लीग, संघ और हिन्दू महासभा भी उसकी रणनीति से जन्मे और उसके एजेंडे को आगे बढ़ाते रहे। हिन्दू-मुसलमान के सवाल पर जिन्ना और ब्रिटिश हुकूमत ने मुल्क बंटवा। आज केन्द्रीय सत्ता जिन लोगों के हाथ में है वे मुल्क को अस्सी और बीस में बांटने में लगे हैं।

पूरे देश में भाजपा को एक भी मुसलमान न तो चुनाव लड़ाने के काबिल लगता है और न ही मंत्री बनाने लायक। इसके बावजूद उसे सबका साथ सबका विकास का नारा लगाने में शर्म नहीं आती। बाबरी मस्जिद के सवाल को जबसे भाजपा ने अपनाया तब से हाशिए

फोटो स्रोत : गूगल

सदुपयोग-दुरुपयोग की चर्चा तो बहुत छोटी बात है। इनके दुरुपयोग में भी आज जितनी और जैसी बेशर्मी पहले कभी न थी। थाने से लेकर चीफ सेक्रेटरी तक की नियुक्ति और तैनाती में पक्षपात, विश्वविद्यालयों से लेकर हर नियुक्ति में पक्षपात या भ्रष्टाचार नियम बन गए हैं। मंडी समिति से लेकर पंचायतों के वार्ड तक के चुनाव और नियुक्तियों में घपले हों रहे हैं। संस्थाओं की बदहाली की चर्चा आगे भी होगी।

लोकतंत्र और लोकतान्त्रिक व्यवस्था का कायम और मजबूत होना पचहत्तर साल की सबसे बड़ी उपलब्धियों में है। इस चलते मुल्क मजबूत हुआ है क्योंकि दिन ब दिन सबसे कमजोर लोग और समूह भी इस व्यवस्था में उत्साह के साथ जुड़ते गए हैं और दुनिया के विपरीत हमारा लोकतंत्र जीवंत और मजबूत हुआ है। लेकिन साथ ही दो बदलाव और हुए हैं। बढ़ती गैर बराबरी और

लोकतंत्र और लोकतान्त्रिक व्यवस्था का कायम और मजबूत होना पचहत्तर साल की सबसे बड़ी उपलब्धियों में है। इस चलते मुल्क मजबूत हुआ है क्योंकि दिन ब दिन सबसे कमजोर लोग और समूह भी इस व्यवस्था में उत्साह के साथ जुड़ते गए हैं और दुनिया के विपरीत हमारा लोकतंत्र जीवंत और मजबूत हुआ है

सारे धन के कुछ हाथों में सिमटने से यह भी हुआ है कि संसद पैसे वालों से भर गई है। सरकार दो व्यवसायिक घरानों की एजेंट बन गई लगती है।

दूसरी ओर वोट के अधिकार ने लोगों के अंदर भी जरूरी जवाबदेही भी लाने की जगह सिर्फ अधिकार की बात भरी है। इससे एक उच्चश्रृंखलता पैदा हुई है। यह अराजक तत्व बहकावे में आकार कुछ भी करने को तैयार हैं और इसे बाजार के सहयोगी सोशल मीडिया के सहारे खूब नचाया भी जा रहा है। ऐसे लोगों को हत्यारों और बलात्कारियों का खुला अभिनंदन करने में भी शर्म नहीं आती क्योंकि उनको यह पढ़ा दिया जाता है कि यह सब महान काम एक खास उद्देश्य से किया गया था।

लोकतंत्र के हजार गुणों के साथ कुछ दुर्गुण भी हैं। वह चुनावी लड़ाई में समाज के हर दरार का इस्तेमाल अपने अपने पक्ष में करने

फोटो स्रोत : गूगल

की ताकत केंद्र में मजबूत होती गई है। दूसरी ताकतें भी कमजोर हुई हैं और गांधी, नेहरू, लोहिया जेपी जैसे दूरद्रष्टा नहीं रहे। मुझे जार्ज बुश का वह कथन याद आ रहा है कि मुल्क का राष्ट्रपति मुसलमान (कलाम साहब), प्रधानमंत्री सिख (मनमोहन सिंह) और शासक गठबंधन यूपीए का अध्यक्ष (जन्म से) ईसाई हों और मुल्क की अधिकांश आबादी हिन्दू हो, तब भी वह सबसे शानदार ढंग से तरक्की कर रहा है। पर मुल्क ने जब भाजपा को अवसर दिया तो दलित, आदिवासी का खेल चल रहा है और सारे अधिकार डेढ़ आदमियों के पास आ गए हैं।

ऐसा संविधान की भावना के खिलाफ तो है ही, आज तो लोकतंत्र और राष्ट्र को एक दूसरे का विरोधी बना दिया गया है। मौलिक अधिकारों और नीति-निर्देशक तत्वों को ही दरकिनार करने की कोशिश हो रही है। समानता तथा धर्मनिरपेक्षता तो मजाक का विषय बना दिए गए हैं। गैर बराबरी बेहिसाब रफ्तार से बढ़ रही है।

यह भुला दिया गया है कि समानता, बंधुत्व और सर्वधर्म समानता हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के केन्द्रीय मूल्य थे और जमींदारी उन्मूलन एक बड़ा कार्यक्रम। आजादी के बाद जब हमने अपने ढंग से विकास शुरू किया तो दुनिया हमारी ओर उम्मीद से देखती थी कि भारत आजादी के साथ इतने मोर्चों पर पश्चिम और सोवियत संघ से अलग तरह का प्रयोग कर रहा है। नेहरू का वैश्विक आदर कोई निजी यारी-दोस्ती से नहीं था बल्कि इसी प्रयोग के चलते था, बड़ी कुशलता से लोकतंत्र अपनाने, स्वतंत्र चुनाव कराने, स्वायत्त लोकतान्त्रिक संस्थाओं के गठन और संचालन के चलते था। चुनाव आयोग, दलीय लोकतंत्र, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच अधिकारों और कामों के संतुलित बंटवारे और अपने-अपने ढंग से उनके आगे बढ़ाने को लेकर था।

सीबीआई, प्रवर्त्तन निदेशालय, पुलिस के

फोटो स्रोत : गूगल

की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। सो अपने यहां भी जाति, धर्म, भाषा, लिंग और अन्य उन सभी बांटने वाली चीजों का जोर बढ़ा है जिसे हमारा राष्ट्रीय आंदोलन खत्म करना चाहता था और जिस दिशा में आजादी के शुरुआती वर्षों में हमने प्रगति भी की थी।

दुनिया में हमारे आईटी प्रोफेशनल, डाक्टर और इंजीनियरों की धूम हमारे लिए गर्व का विषय है तो चपरासी के पद के लिए पीएचडी लोगों का अर्जियां भेजना शर्म की चीज है। हमारे यहां साक्षरता और शिक्षा के फर्क और आम स्कूल कालेज की पढ़ाई के स्तर के चलते ऐसा है। रेलवे के नब्बे हजार पदों के लिए ढाई करोड़ अर्जियां पहुंचने पर शर्म आती है। पांचवीं में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चों के दूसरी कक्षा की किताब न पढ़ पाने पर शर्म आती है। सरकार स्थायी शिक्षक देने के बदले पंजीरी बांटने और स्कूल की इमारत बनवाने को प्राथमिकता बना ले तो शर्म आती है। जब लोग लाशों को गंगा में बहाते हैं तब शर्म आती है। लाशों के ऊपर दो राज्यों की राजनीति दिखती है तब शर्म आती है। जब अदालत गुजरात दंगों में शीर्ष वालों को क्लीन चिट देकर शिकायतकर्ता को सजा देती है और पुलिस तुरंत सक्रिय होती है तब शर्म आती है। स्वामीभक्ति के रोग से न्यायपालिका और मीडिया ग्रसित दिखती है तब शर्म आती है।

पर जब सुप्रीम कोर्ट पैतृक सम्पत्ति में बेटियों के बराबरी के अधिकार की बहुत साफ व्याख्या करता है तब वह बेटियों के साथ पूरे मुल्क को एक अलग ढंग से आश्वस्त करता है कि अभी सब कुछ नहीं बिगड़ा है। जिस हिन्दू कोड बिल का मसला संविधान सभा से लेकर 11 अगस्त 2020 तक खिंचा आ रहा था और जिसने अम्बेडकर के इस्तीफे से लेकर राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद और सरदार पटेल तक की पक्षधरता को जगजाहिर किया।

जिसमें करपात्री जी महाराज से लेकर लगभग पूरा हिन्दुवादी खेमा सत्तर पचहत्तर साल से विरोध करता ही रहा हो उसके एक इतने बड़े प्रावधान पर बने 2005 के कानून पर सुप्रीम कोर्ट की मुहर लग जाए तो इसका महत्व निश्चित रूप से इस कानून भर में आने वाली व्यवस्था से काफी बड़ा है।

यह ऐसा मामला नहीं है कि मोदी सरकार और उसके मीडिया मैनेजमेंट में लगे लोग इसको अपनी उपलब्धि या अपनी सरकार द्वारा न्यायपालिका की आजादी के उदाहरण

के तौर पर पेश करें पर यह वैसा ही मामला है।

मोदी राज ने चुनावी वायदों और अमल के फासले में अपूर्व वृद्धि के साथ एकदम नया रिकार्ड बनाया है और ऐसे में कहीं कोई संवैधानिक संस्था किसी मामले में सचमुच स्वायत्त ढ़ंग से फैसला करती है तो हैरानी होती है।

ऐसा नहीं है कि मोदी से पूर्व की सरकारों ने, जिसमें नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक की कांग्रेसी सरकारें और मोरारजी देसाई से लेकर अटलबिहारी वाजपेयी की गैर कांग्रेसी सरकारों ने संस्थाओं की स्वायत्तता पर चोट नहीं की, बल्कि विरोधी दलों की राज्य सरकारों को गिराने के लिए राज्यपाल के पद और दलबदल का ऐसा दौर आया कि बहुत सख्त दलबदल कानून आया और राज्यपाल का पद ही समाप्त करने की बात उठने लगी। सरकारिया आयोग और विभिन्न अदालती फैसलों ने राज्यपाल, विधान सभा अध्यक्ष, पार्टियों के सचेतकों और पूरी प्रक्रिया को साफ कर दिया है और कोई ईमानदारी से चलना चाहे तो अब शायद ही किसी बात का कंफ्यूजन बचा है। जाहिर है तब गलतियां हुईं, स्वायत्तता का हनन हुआ तो हंगामा भी मचा और सुधार की कोशिश हुई।

लेकिन नरेन्द्र मोदी का राज आने के साथ ही उत्तराखंड की सरकार गिराने से लेकर राजस्थान की सरकार गिराने की कोशिश मे मुंह की खाने के बीच कम से कम दस राज्य सरकारों को खरीद फरोख्त, राज्यपाल और अन्य संस्थागत पदों के दुरुपयोग से गिराया गया होगा, बदला गया या बदलने की कोशिश की गई है।

जैसे ही एक 'आपरेशन' शुरु होता है, राज्यपाल से लेकर टीवी चैनल तक एक ही भावबोध में आ जाते हैं। मजे की बात यह भी है कि राजनैतिक विरोधियों के मामले पकड़कर उनके कान उमेठकर उन्हें भी इसी जुगलबंदी में शामिल कर लिया जाता है।

ऐसा नहीं है कि मोदी से पूर्व की सरकारों ने, जिसमें नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक की कांग्रेसी सरकारें और मोरारजी देसाई से लेकर अटलबिहारी वाजपेयी की गैर कांग्रेसी सरकारों ने संस्थाओं की स्वायत्तता पर चोट नहीं की, बल्कि विरोधी दलों की राज्य सरकारों को गिराने के लिए राज्यपाल के पद और दलबदल का दौर आया

पर जब अदालती कामकाज मेँ ज्यादा छेड़छाड़ हुई और संवेदनशील मुकदमे मनचाहे या जूनियर लोगों को सौंपने के मामले ज्यादा बढ़ गए चार सबसे वरिष्ठ जजों ने सीधे जनता की अदालत में मामला ले जाने का फैसला किया। आज हर मामले में प्रवर्तन निदेशालय का 'इस्तेमाल' होने लगा है जबकि उसके अधिकार क्षेत्र सीमित हैं। चुनाव आयोग और सीएजी जैसी संस्थाओं के कामकाज में क्या गिरावट आई है और उसके शीर्ष पदों पर नियुक्तियां किस तरह हुई हैं वह भी लम्बी कहानी है पर सूचना आयुक्त की नियुक्ति पूरे मोदी शासन में अब तक नहीं हुई है क्योंकि उसकी नियुक्ति प्रक्रिया में इतनी मनमानी सम्भव नहीं है। मुल्क का अगर सबसे बड़ा नुकसान हुआ है तो संस्थाओं की विश्वसनीयता जाने का और यह चीज सुप्रीम कोर्ट, पार्टी सिस्टम, चुनाव आयोग, राज्यपाल जैसे पद, ईडी, सीबीआई, सूचना आयोग, सीएजी वगैरह की प्रतिष्ठा गिराने भर तक नहीं रुकी है।

आज देश के सारे आंकड़े अविश्वसनीय हो गए हैं जबकि सौ साल से ज्यादा पुरानी हमारी सांख्यिकी प्रणाली को दुनिया के सबसे विश्वसनीय प्रणालियों में एक गिना जाता था।

मशहूर समाजशास्त्री आशीष नन्दी ने हाल के एक इंटरव्यू में कहा है कि पिछले छह सालों में जितनी चीजें बिगड़ी हैं उन्हें ठीक करने में एक पीढ़ी लगेगी।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

ग्वालियर में गूंजी जातीय जनगणना की मांग

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश के ग्वालियर में कोटेश्वर मंदिर परिसर से 19 अगस्त को यादव समाज के जन्माष्टमी चल समारोह को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। चल समारोह से पहले कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश में जातिगत आधार पर जनगणना होनी चाहिए। कुछ दल नहीं चाहते हैं कि जातिगत आधार पर जनगणना हो। जातिगत आधार पर जनगणना से ज्ञात हो जाएगा कि किस समाज की कितनी जनसंख्या है।

अपने संबोधन में श्री अखिलेश यादव ने समाज बंधुओं को अपने इतिहास का स्मरण कराते हुए कहा कि महाभारत के युद्ध में एक तरफ नारायणी सेना थी, दूसरी तरफ श्रीकृष्ण स्वयं थे। पांडव विजयी हुए। आज यहां नारायणी सेना मौजूद है। आप सब लोग जानते हैं कि दुर्योधन ने क्या मांगा था, पूरी सेना मांग ली, लेकिन जीत उसी की हुई जहां पर भगवान श्री कृष्ण जी खड़े थे।

श्री अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश में अगले

साल होने वाले विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के भी मैदान में होने पर भी मुहर लगा दी। उन्होंने कहा कि सपा भी अपने उम्मीदवार खड़े करेगी। पार्टी पूरी मजबूती से चुनाव लड़ेगी। समारोह में पूर्व मंत्री भगवान सिंह यादव, सांसद केपी यादव, अशोक सिंह, वीर सिंह, मितेंद्र सिंह सहित काफी संख्या में समाज बंधु उपस्थित थे।

अन्याय का प्रतिरोध

रमाकांत से मुलाकात

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का सरकारी तंत्र द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के खिलाफ पार्टी मजबूती से अपने नेताओं के साथ खड़ी है। अन्याय का प्रतिरोध करने की समाजवादी परंपरा का निर्वहन करते हुए पार्टी ने स्पष्ट कर दिया है कि वह इस सरकारी उत्पीड़न के खिलाफ मुखर होकर अपना विरोध दर्ज करेगी।

इसी सिलसिले में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 22 अगस्त को आजमगढ़ के मंडलीय कारागार में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री रमाकांत यादव से मुलाकात की। श्री रमाकांत यादव जनपद के फूलपुर विधानसभा क्षेत्र से विधायक है। वे आजमगढ़ से 4 बार सांसद भी रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर कहा कि भाजपा सरकार के इशारे पर लगातार श्री रमाकांत यादव के खिलाफ झूठे मुकदमे लगाए जा रहे हैं। सरकार चाहती है कि वह जेल से बाहर न आने पाएं। श्री यादव ने कहा कि भाजपा 2024 की अभी से तैयारी कर रही है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा

विपक्ष पर झूठे आरोप लगा रही है। भाजपा की तमाम गलत कार्यवाहियों के पीछे प्रशासन है। उन्होंने कहा भाजपा सरकार गरीबी, महंगाई और बेकारी पर बात नहीं करना चाहती है।

श्री यादव ने कहा कि जानबूझकर जनता का ध्यान भटकाने और विपक्ष के नेताओं की आवाज को दबाने के लिए ये लोग चिह्नित कर झूठे मुकदमे लगाकर जेल भेज रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने विश्वास दिलाया कि 2024 में आजमगढ़ सीट जनता के समर्थन से बड़े बहुमत के साथ वापस आ जाएगी। श्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार से जातीय जनगणना कराने की मांग की।

आजम साहब के मामले में ज्ञापन सौंपा

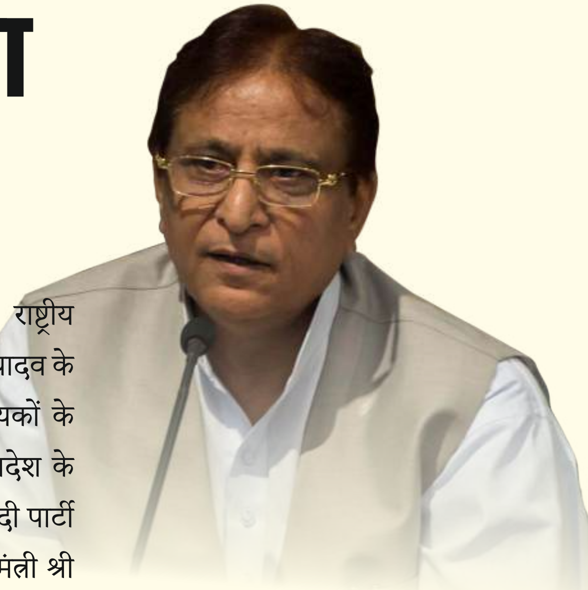

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर सपा विधायकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने 22 अगस्त को प्रदेश के पुलिस महानिदेशक से मिलकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री आजम खान के खिलाफ रामपुर प्रशासन द्वारा लगाए जा रहे फर्जी मुकदमों को हटाने और उत्पीड़न की कार्रवाई को तत्काल रोकने की मांग की।

प्रतिनिधिमंडल ने डीजीपी को सौंपे ज्ञापन में मांग की है कि शासन प्रशासन को बदले की भावना से कार्रवाई नहीं करने दिया जाना चाहिए। प्रतिनिधिमंडल में शामिल समाजवादी पार्टी के विधायक एवं पूर्व मंत्री डॉ मनोज कुमार पांडे, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री रविदास मेहरोत्रा, विधायक श्री फहीम अहमद और विधायक श्री अरमान खान ने डीजीपी को सौंपे ज्ञापन में कहा कि जब से प्रदेश में भाजपा सरकार सत्तारूढ़ हुई है, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं वरिष्ठ विधायक मोहम्मद आजम खान के खिलाफ निराधार एवं मनगढ़ंत आरोप लगाकर बदले की भावना से प्रताड़ित किया जाने लगा है।

प्रतिनिधिमंडल ने डीजीपी से कहा कि मोहम्मद आजम खान साहब उत्तर प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री और सांसद भी रह चुके हैं। उन्होंने निष्पक्षता के साथ हर स्तर पर अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन किया है। मोहम्मद आजम खान साहब एक दर्जन बार विधायक एवं सांसद रह चुके हैं।

मोहम्मद आजम खान साहब की भारतीय संविधान के प्रति अटूट निष्ठा है और वह हमेशा सामाजिक सद्भाव एवं सौहार्द को मजबूती देते हैं। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि भाजपा सरकार में मोहम्मद आजम खान साहब पर मुकदमों की बाढ़ आ गई है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने मोहम्मद आजम खान साहब के प्रति विद्वेषपूर्ण कार्यवाहियों का विरोध किया है और उनके निर्दोष होने पर बल दिया है। इस सबके बावजूद भाजपा उनसे हद दर्जे तक नफरत करती है, क्योंकि आजम खान साहब ने रामपुर में गरीबों की तालीम को न केवल बढ़ावा दिया है अपितु मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय की स्थापना कर नौजवानों के लिए ज्ञान को विस्तार भी दिया है।

बिहार से चली बदलाव की बयार

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

बिहार में महागठबंधन सरकार की वापसी हुई है। 2017 में नीतीश कुमार ने महागठबंधन को तोड़ने और एनडीए से जुड़ने का जो राजनीतिक फैसला लिया था, उसकी भूल-सुधार नीतीश कुमार ने कर ली है। तेजस्वी यादव के साथ महागठबंधन सरकार का गठन हुआ है। डंके की चोट पर यह संदेश देश को मिला है कि महागठबंधन के फॉर्मूले से चुनाव के दौरान या चुनाव के बाद भी भाजपा के नेतृत्व वाली सियासत को धराशायी किया जा सकता है। 2015 में बिहार में पैदा हुई महागठबंधन की सोच ने मोदी लहर की हवा निकाल दी थी। दो साल बीतते-बीतते नीतीश कुमार ने महागठबंधन की सोच को ही पंचर कर दिया था। मगर, यह सोच बिहार से बाहर जवां होती रही है। इसके दो बड़े उदाहरण सामने आए। महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी और उत्तर प्रदेश में आम चुनाव के दौरान समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी

का मिलकर चुनाव लड़ना।

महाराष्ट्र में भाजपा ने एकनाथ शिन्दे मॉडल से महाविकास अघाड़ी की चुनौती को बेअसर करने का काम किया है तो उत्तर प्रदेश में मायावती ने वही गलती की जो नीतीश कुमार ने 2017 में की थी। हालांकि मायावती सत्ता से हटीं या जुड़ीं नहीं थीं लेकिन उनके कदम से विपक्ष कमजोर हुआ और भाजपा उत्तर प्रदेश और देश में मजबूत हुई। 2019 के आम चुनाव में जब यूपी में बहुजन समाज पार्टी ने 10 लोकसभा की सीटें जीती थीं तो बसपा प्रमुख मायावती ने इसकी प्रतिक्रिया समाजवादी पार्टी से गठबंधन तोड़ते हुए दी थी। उनका संदेश था कि महागठबंधन का फायदा बसपा को नहीं मिला बल्कि बसपा का फायदा दूसरे दल खासकर समाजवादी पार्टी को मिला। लेकिन, मायावती के इस दावे की पोल विधानसभा चुनाव 2022 के नतीजों ने खोलकर रख दी। 2019 में गठबंधन टूटने पर चुप रहे अखिलेश यादव के पक्ष में विधानसभा चुनाव के आंकड़े चीख-चीख कर बोल रहे थे।

यूपी विधानसभा चुनाव के बाद अब यह बात साबित करने की नहीं रह गयी है कि अगर समाजवादी पार्टी से गठबंधन नहीं हुआ होता तो 2019 में मायावती संभवत: एक सीट भी नहीं जीत पातीं। यह अखिलेश यादव की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने मायावती के साथ चुनावी गठबंधन करने का चौंकाने वाला निर्णय लिया। बिहार की तर्ज पर अगर यूपी में भी महागठबंधन बने और उसमें न सिर्फ कांग्रेस बल्कि बाकी छोटे दल भी उसमें शामिल हों तो यूपी में लोकसभा की 80 सीटों के नतीजे देश की सियासी तस्वीर बदल दे सकते हैं।

यूपी विधानसभा चुनाव के दौरान भी बसपा और कांग्रेस को छोड़कर समाजवादी पार्टी ने छोटे-छोटे दलों के साथ जो राजनीतिक गठबंधन तैयार किया था, उसके अच्छे नतीजे मिले। हालांकि अपेक्षित सफलता नहीं मिली मगर, इसमें भी दोष गैर भाजपा सियासत का ही है। अगर बसपा ने पहला राजनीतिक शत्रु भाजपा के बजाए समाजवादी पार्टी को नहीं बनाया होता और बसपा के वोट भाजपा को ट्रांसफर नहीं हुए होते तो मामूली अंतर से हारी गयी सीटें मात्र जीत जाने से समाजवादी पार्टी के गठबंधन की सरकार आसानी से बन गयी होती।

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने बड़ा दिल दिखाते हुए महागठबंधन की जरूरत सामने रख दी है। जाहिर है वे कटु अनुभवों को खुद भी भूलने का संदेश दे रहे हैं और बाकी दलों से भी ऐसा करने की जरूरत समझने को कह रहे हैं। ऐसा नहीं है कि बिहार में सिर्फ नीतीश ने अपनी गलती समझी। तेजस्वी ने भी नीतीश चाचा को माफ करने का फैसला किया। तभी बिहार में महागठबंधन का स्वरूप दोबारा खड़ा हो पा रहा है। बिहार में महागठबंधन के पास दो तिहाई बहुमत है और वोटों के प्रतिशत के रूप में भी यह बहुमत उनके पास मौजूद है। इस वजन के सामने प्रतिद्वंद्वी भाजपा का

फोटो स्रोत : गूगल

भाजपा के खिलाफ बनेगा मजबूत विकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीअखिलेश यादव ने बिहार में हुए राजनीतिक बदलाव को सकारात्मक संकेत बताते हुए उम्मीद जतायी है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ एक मजबूत विकल्प तैयार होगा।

श्री अखिलेश यादव ने पीटीआई-भाषा से साक्षात्कार में कहा कि उत्तर प्रदेश में भी बिहार की तरह भाजपा को झटका लगेगा। यहां भी भाजपा के सहयोगी दल उससे खुश नहीं हैं और भविष्य में वे इस सत्तारूढ़ पार्टी से नाता तोड़ लेंगे।

उन्होंने कहा कि बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के भाजपा-नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से नाता तोड़कर राष्ट्रीय जनता दल , कांग्रेस तथा कई अन्य दलों के साथ मिलकर महागठबंधन की सरकार बनाना एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने उम्मीद जताई कि अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ एक मजबूत विकल्प तैयार होगा।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा के सहयोगी दल उससे खुश नहीं हैं। एक दिन वे सभी उसका (भाजपा का) साथ छोड़ जाएंगे। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का विकल्प तैयार करने में सपा की भूमिका के बारे में पूछे जाने पर यादव ने कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के शरद पवार विकल्प तैयार करने पर काम कर रहे हैं। इस वक्त हमारा ध्यान उत्तर प्रदेश में पार्टी को मजबूत करने पर है।

पार्टी संगठन को मजबूत करने के सवाल पर सपा अध्यक्ष ने कहा कि उनका पूरा ध्यान पार्टी को मजबूत करने पर है और इसी साल दल का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि पार्टी का सदस्यता अभियान चल रहा है और उसे अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। इस साल के अंत में होने वाले नगरीय निकाय चुनावों के बारे में सपा अध्यक्ष ने कहा कि इसकी तैयारियां की जा रही हैं और इसके लिए प्रभारियों की नियुक्ति की गयी है।

एक सवाल के जवाब में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चुनाव आयोग की बेईमानी के कारण यूपी में हम चुनाव हारे हैं। उन्होंने कहा कि देश में अब कोई भी निष्पक्ष संस्थान बाकी नहीं रह गया है। सरकार दबाव डालकर इन संस्थानों से मनमाफिक काम करा रही है।

उत्तर प्रदेश के पिछले विधानसभा चुनाव और रामपुर तथा आजमगढ़ लोकसभा सीट के उपचुनाव में सपा की पराजय के लिए चुनाव आयोग की बेईमानी को जिम्मेदार करार दिया और कहा कि अगर आयोग ने ईमानदारी से काम किया होता तो नतीजे कुछ और ही होते।

वजन कुछ भी नहीं है।

जाहिर है आने वाले चुनाव में महागठबंधन भाजपा पर भारी पड़ेगा और, अगर ऐसा हुआ तो बिहार की 40 सीटों में से 39 पर जीत हासिल करने वाला एनडीए दो-चार सीटों के लिए भी तरस जा सकता है। ऐसे में 303 सीटें जीतने वाली बीजेपी मुश्किल में नज़र आती दिखती है। हालांकि बिहार अकेले भाजपा को सत्ता से न बाहर कर सकता है और न ही सत्ता में बिठा सकता है।

जरा सोचिए कि अगर बिहार की तर्ज पर उत्तर प्रदेश में महागठबंधन खड़ा हुआ तो क्या भाजपा दोबारा दिल्ली की गद्दी हासिल कर सकेगी? बिहार और यूपी की 120 लोकसभा सीटें संसद की 540 सीटों का 22 फीसदी है। मगर, इसका महत्व यह है कि इन 120 सीटों में एनडीए के पास 94 सीटें हैं यानी 78 फीसदी से ज्यादा सीटें एनडीए के पास है। बिहार की तर्ज पर बनने वाले महागठबंधन में यह क्षमता है कि वह बिहार-यूपी के दम पर ही भाजपा को लोकसभा में बहुमत से दूर कर दे। इस अहमियत को अगर सपा, बसपा और कांग्रेस समेत दूसरे छोटे दल समझें तो यूपी में महागठबंधन खड़ा करने का उत्साह ही अलग होगा।

महागठबंधन अगर बिहार और यूपी में बना तो यह देश के बाकी राज्यों में भी बनेंगे। प्रदेश स्तर पर महागठबंधन तैयार करना अधिक प्रभावशाली है। इस तरीके से संघीय सियासत मजबूत होगी और क्षेत्रीय दलों को भी उभरने का मौका मिलेगा। दूसरा फायदा यह होगा कि क्षेत्रीय दल भी राष्ट्रीय जरूरतों से खुद को जोड़ेंगे। बीजेपी ने हाल ही में जिस तरीके से क्षेत्रीय दलों के अस्तित्व को नकारा है और उसकी अहमियत को कम करके आंका है उसका जवाब भी महागठबंधन की सियासत ही है।

गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और असम जैसे प्रदेशों में भी अगर महागठबंधन उसी तर्ज पर बनते हैं जैसे अखिलेश यादव ने यूपी में बनाने की अपील की है तो सही मायने में यह मोदी-शाह के विजय रथ को रोकने का अचूक मंत्र साबित होगा। अखिलेश यादव की पहल की अहमियत कांग्रेस समेत राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दलों को बिल्कुल समझ में आ रही होगी क्योंकि बीते आठ साल में क्षेत्रीय दलों को खत्म करने का लक्ष्य लेकर भाजपा ने देश की संघीय सियासत को चोट पहुंचायी है। क्षेत्रीय दलों के कमजोर होने से समस्याएं बढ़ी हैं और उन समस्याओँ को चिन्हित करने की क्षमता उतनी ही तेजी से घटी है। वक्त है कि राष्ट्रीय सियासत में क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के साथ मिलकर अपना हिस्सेदारी सुनिश्चित करें।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

चौधरी साहब की सृजन स्थली

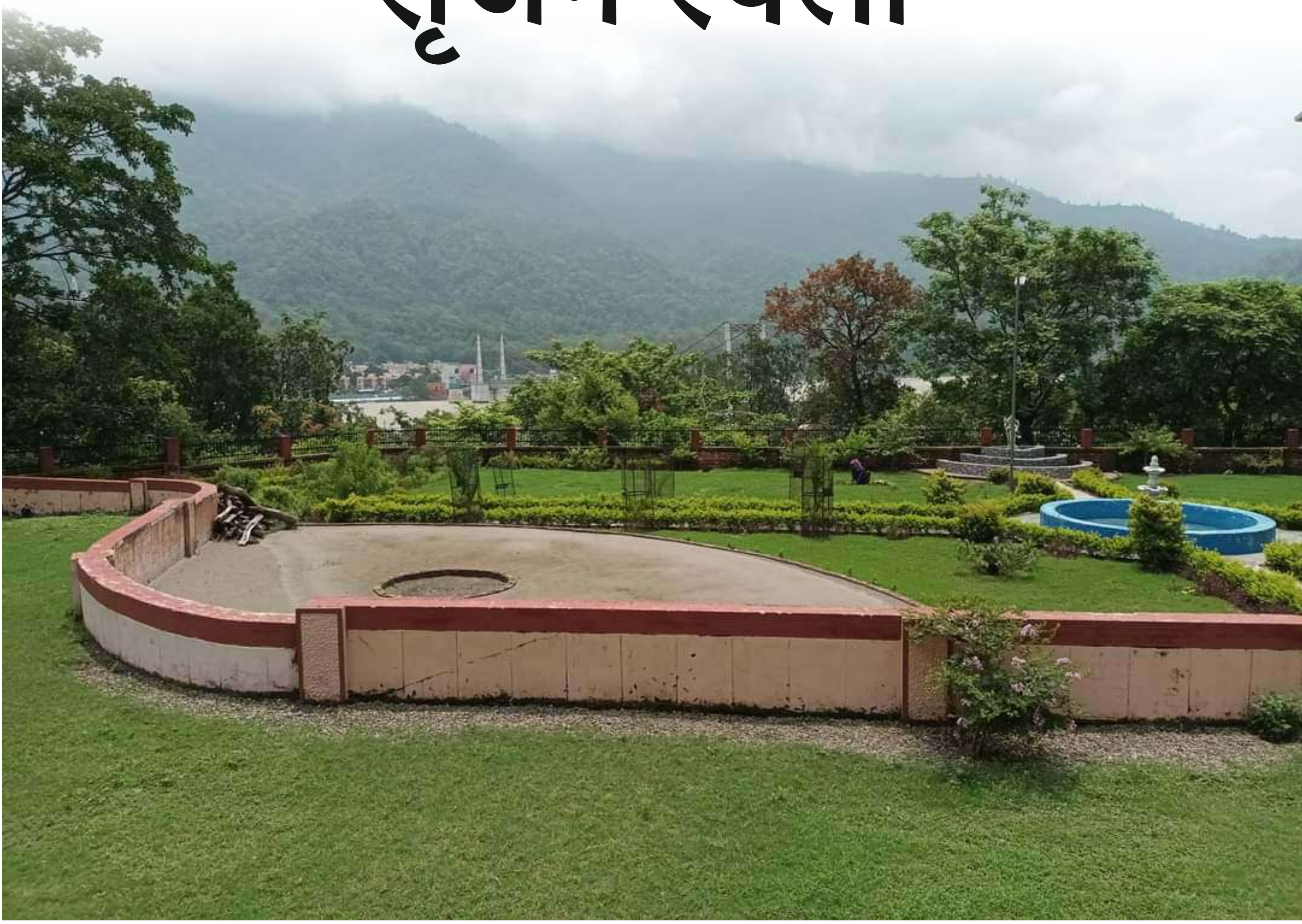

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सदस्य विधान परिषद श्री राजेन्द्र चौधरी के नेतृत्व में एक दल ने गुरु पूर्णिमा पर उत्तराखंड में पवित्र जीवनदायिनी गंगा तट ऋषिकेश के मुनि की रेती पर स्थित वन विभाग डाक बंगला का भ्रमण किया।

वन विश्राम भवन, मुनि की रेती की विशेषता यह है कि इसका निर्माण तत्कालीन वन मंत्री किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह ने 1964-66 में कराया था। चौधरी साहब ने अपने दो दर्जन से अधिक अंग्रेजी की पुस्तकों का लेखन यहीं किया था। भारतीय अर्थनीति, किसानों से जुड़े मुद्दे सहित सरकार की नीतियों के लिए अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों

के सृजन का यह वन विश्राम भवन गवाह है। श्री राजेन्द्र चौधरी पांच दशकों से अनवरत उत्तराखंड, ऋषिकेश, मुनि की रेती में समाजवादी विचार परंपरा को गतिमान बनाए हुए हैं। चौधरी चरण सिंह से जुड़े अनेक संस्मरणों को उन्होंने साथ गए दल के साथ संवाद के दौरान याद किया।

उल्लेखनीय है कि 1974 के विधानसभा चुनाव में पूर्व प्रधानमंत्री श्री चौधरी चरण सिंह ने ही श्री राजेन्द्र चौधरी को भारतीय क्रांति दल के सिंबल पर गाजियाबाद से पहला चुनाव लड़ाया था एवं उनके समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित भी किया था। हालांकि उस चुनाव में श्री राजेन्द्र चौधरी निर्वाचित नहीं हो पाए लेकिन अगले चुनाव 1977 में सदस्य विधान सभा निर्वाचित हुए साथ ही युवा जनता के प्रदेश अध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी निभाई।

श्री राजेन्द्र चौधरी के साथ गए दल ने पाया कि उत्तराखंड में श्री अखिलेश यादव की विकासवादी कार्यशैली एवं शालीन व्यक्तित्व का असर आमजन की चर्चा में पहुंच चुका है। लोगों से बातचीत के क्रम में कई जगह राष्ट्रीय राजनीति में विकल्प के रूप में लोग उनकी चर्चा करते मिले एवं बेहतर राजनीतिक संभावना की बात कही।

इस दल में लखनऊ विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो रमेश दीक्षित, सुपरिचित लेखिका वंदना मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार मधुकर त्रिवेदी, वरिष्ठ समाजसेवी एवं उत्तराखंड योजना आयोग के सदस्य रहे श्री बच्चन पोखरियाल, एसके राय एवं मणेंद्र मिश्रा 'मशाल शामिल थे।

प्रतिभा का प्रोत्साहन

बुलेटिन ब्यूरो

चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर खेल का मैदान, प्रतिभाओं को सम्मानित कर उनका हौसला बढ़ाने के मामले में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव एक मिसाल हैं। वे हमेशा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते हैं। इसी कड़ी में श्री यादव ने हाल ही में सीबीएसई परीक्षा में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दो छात्राओं, कॉमनवेल्थ गेम्स में कांस्य पदक विजेता भारत के खिलाड़ी एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर के एक तेज धावक को सम्मानित किया।

दिनांक 17 अगस्त को श्री अखिलेश यादव से बर्मिंघम में हुए 2022 के कॉमनवेल्थ गेम्स में कांस्य पदक विजेता श्री विजय कुमार यादव ने भेंट की। श्री यादव को यह पदक जूडो के खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मिला है। उनके साथ उनके कोच श्री शैलेश यादव भी थे। श्री अखिलेश यादव ने श्री विजय कुमार यादव और उनके कोच श्री शैलेश यादव को उनकी जीत पर बधाई दी और सम्मानित किया।

इससे पहले 16 अगस्त को श्री अखिलेश यादव ने सीबीएसई परीक्षा में 10वीं एवं 12वीं में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दो छात्राओं सुश्री प्रियांशी देशवाल एवं सुश्री दीपा नामदेव से समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में भेंट की। श्री यादव ने दोनों छात्राओं को लैपटाप देकर सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सुश्री प्रियांशी देशवाल, गांव बधेव को सीबीएसई की 12वीं परीक्षा में पूर्णांक 500 में 498 अंक प्राप्त हुए है जबकि सुश्री दीपा नामदेव जिला शामली को सीबीएसई की 10वीं की परीक्षा में 500 में 500 अंक मिले हैं। प्रियांशी के साथ

उनके पिता श्री अमित कुमार देशवाल तथा भाई गविश देशवाल और दीपा नामदेव के साथ उनके पिता श्री पुष्पेन्द्र कुमार नामदेव मौजूद थे।

16 अगस्त को ही श्री अखिलेश यादव से अन्तरराष्ट्रीय स्तर के तेज धावक कर्नल क्रिशन सिंह ने भेंट की। श्री अखिलेश यादव ने उन्हें सम्मानित कर बधाई दी। श्री क्रिशन सिंह बधवार ने मिलिट्री स्कूल, अजमेर में पढ़ाई की और 1994 में वे 25वीं राजपूत इनफ्रैन्ट्री यूनिट में भर्ती हुए जहां उन्होंने कमाण्डो की ट्रेनिंग पूरी की। राष्ट्रीय राइफल्स में प्रतिनियुक्ति पर दो बार उन्होंने जम्मू-कश्मीर में उग्रवादियों से लोहा लिया जिसके लिए उन्हें वीरता का सेना मेडल प्रदान किया गया।

श्री बधवार ने मनेसर में एडवांस कमांडो ट्रेनिंग के बाद तीन साल तक एनएसजी कमांडो के रूप में काम किया। सन् 2012 में उन्हें कर्नल रैंक में प्रोन्नति मिली और ढाई वर्ष तक उन्होंने अपनी पैरेंट यूनिट 25वीं राजपूत की कमान संभाली। 2 वर्ष उन्होंने बेल्जियम में सेना की यूनिट की कमान संभाली। देहरादून में एनसीसी में प्रतिनियुक्ति के दौरान उन्होंने लगातार 100 दिनों तक 6700 किलोमीटर की दौड़ का विश्व रिकार्ड बनाया। लगातार 101 अल्ट्रा रन में भाग लेकर 6827.5 किलोमीटर दौड़ लगाई। श्री बधवार साल 2021 में दून वैली मैराथन के ब्रांड एम्बेसडर भी रहे। वे भारत रनर्स प्रीमियर लीग-2021 के विजेता भी हैं।

जनेश्वर जी

आजीवन संघर्ष के प्रतीक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने दिनांक 5 अगस्त को वरिष्ठ समाजवादी नेता श्री जनेश्वर मिश्र जी की 89वीं जयंती पर गोमतीनगर, लखनऊ में जनेश्वर मिश्र पार्क में स्थापित उनकी आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने श्री जनेश्वर मिश्र ट्रस्ट में लगी उनकी प्रतिमा पर भी माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया गया।

जनेश्वर मिश्र पार्क में बड़ी संख्या में एकल सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी श्री मिश्र की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। श्री यादव ने कहा कि श्री मिश्र आजीवन गरीबों, किसानों और नौजवानों के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने सभी के साथ समानता का व्यवहार किया। संसद में उनको सभी शांति से सुनते थे। समाजवादी पार्टी उनके ही आदर्शो पर चल रही है।

श्री जनेश्वर मिश्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात श्री अखिलेश यादव ने लगभग चार सौ एकड़ में फैले जनेश्वर मिश्र पार्क का भ्रमण किया। यह पार्क लंदन के हाइड पार्क की तुलना में बेहतर और बड़ा भी है। यह पार्क इस समय अव्यवस्था का शिकार हो गया है। श्री यादव ने कहा कि जनेश्वर मिश्र पार्क को भाजपा सरकार ने बर्बाद कर दिया है। यहां हर तरफ अव्यवस्था का राज है। यह उपेक्षा भाजपा ने इसलिए की कि जनेश्वर मिश्र पार्क समाजवादी पार्टी सरकार द्वारा बनाया गया था। भाजपा की विपक्ष के प्रति बदले की भावना का यह एक और शर्मनाक उदाहरण है।

वीरांगना अवंती बाई लोधी को याद किया

समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय में 16 अगस्त को वीरांगना अवंती बाई लोधी की जयंती सादगी से मनाई गई। मध्य प्रदेश के रामगढ़ की रानी अवंती बाई ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने महारानी अवंती बाई के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि रानी अवंती बाई लोधी को अंग्रेजों के विरूद्ध निर्णायक गोरिल्ला युद्ध के कारण याद किया जाता है। उनकी वीरता के कारण ही मध्य प्रदेश का मंडला और रामगढ़ जिला स्वतंत्र हो गया था। रानी अवंती बाई का आव्हान था कि लोग अंग्रेजो से संघर्ष के लिए तैयार रहें या फिर चूड़ियां पहनकर घर बैठें। रानी अवंती बाई हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं।

इस अवसर पर सर्वश्री राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल सहित राजेन्द्र कुमार लोधी, शैलेन्द्र लोधी, सतीश लोधी, सूरज लोधी, शैलेन्द्र वर्मा, सुनील लोधी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

एसआरएस यादव को श्रद्धांजलि

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व एमएलसी श्री एस.आर.एस. यादव (बाबूजी) की जयंती पर 4 अगस्त को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय 19 विक्रमादित्य मार्ग लखनऊ में उन्हे भावभीन श्रद्धांजलि अर्पित की गई।इस अवसर पर सर्वश्री राजेन्द्र चौधरी राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री, नरेश उत्तम पटेल प्रदेश अध्यक्ष, अरविन्द कुमार सिंह पूर्व एमएलसी, विकास यादव, तथा 'बाबूजी' के सुपुत्र सुधीश कुमार यादव (मुन्ना) ने भी श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र के कई जिलों में कम वर्षा से सूखे जैसे जो हालात बन रहे हैं उनसे राहत देने के लिए उप्र की भाजपा सरकार तत्काल आगे आए नहीं तो पहले ही महँगाई का मारा किसान बद से बदतर हालातों का शिकार हो जाएगा।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार में जिस प्रकार दूध महँगा हो रहा है, उसे देखकर तो ये लगता है कि अब लोग 'दूधो नहाओ' जैसे आशीर्वाद भी नहीं दे पायेंगे।

भाजपाइयों बच्चों के मुँह से दूध तो न छीनो।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अब भाजपाई कहेंगे हमारे विधायक जी गड्ढे में गिरे नहीं बल्कि गड्ढे का गहन अध्ययन करने के लिए गहरे उतरे हैं।

Translate Tweet

जेवर की सड़कों का हाल ऐसा कि खुद विधायक भी गिरकर हुए चोटिल

मुख्यमंत्री ने जेवर विधायक धीरेंद्र का पूछा हाल

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

श्री कृष्ण जन्माष्टमी की मोरपंखी-सुबंसी शुभकामनाएं!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में श्री नीतीश कुमार जी एवं उपमुख्यमंत्री के रूप में श्री तेजस्वी यादव जी को शपथ लेने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

बलात्कारियों का स्वागत करना इंसाफ़ का बलात्कार है।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

छापों को राजनीतिक हथकंडा बनाना निंदनीय है।

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

हमने पहले भी कहा है फिर दोहरा रहे हैं...
'भाजपा के भ्रष्टाचारी कम-से-कम अयोध्या को तो छोड़ दें।'

Translate Tweet

अयोध्या के महापौर, विधायक अवैध कॉलोनाइजर की सूची में

अयोध्या। अयोध्या विकास प्राधिकरण ने शहर में अवैध प्लॉटिंग और अवैध कॉलोनाइजर की जो सूची जारी की है, उसमें नगर निगम अयोध्या के महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता और पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा सहित कई रसूखदारों के नाम हैं। शुक्रवार की रात इस सूची में शामिल एक के घर पुलिस ने रात्रि में दो बार छापा मारा था।

राममंदिर पर फैसला आने और मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या में अवैध प्लॉटिंग और कॉलोनियों की बाढ़ आ गई है। इनमें सत्ता से जुड़े महत्वपूर्ण पदों पर बैठे जनप्रतिनिधि,

Tweet your reply

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा के राज में बजट की नदी सूखी है... ये अगर निकलती भी है तो पहुँचती कहीं और है... ऐसे में गोमती क्या हर नदी अपने सुधार के लिए पानी माँगती दिख रही है।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

गोरखपुर का जब ऐसा है हाल,
तो सोचिये बाकी ज़िले कितने होंगे खुशहाल!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

महापौर की उपस्थिति में अयोध्या नगर निगम द्वारा कूड़ा उठाने वाली गाड़ी से राष्ट्रध्वज पहुंचाने से राष्ट्रध्वज का जो तिरस्कार हुआ है, वो अक्षम्य है।

महोत्सव के नाम पर राष्ट्रध्वज का ऐसा अपमान निंदनीय है।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

हीरा लाल की दुकान में लौंगलता की मिठास... ये मिठास बनी रहे...

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

साज़िश, धोखा, छल, छलावा
एक दिन लौटकर तख़्त गिराता

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जब भाजपाई कोई काम नहीं करेंगे तो आपस में ही एक-दूसरे का काम-तमाम करेंगे।

Translate Tweet

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 60 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty

www.samajwadiparty.in